एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है ।

मुक्ति का रास्ता

एक प्रति का मूल्य 15 रूपये तथा वार्षिक 180 रूपये ।

फरवरी-2012

प्राचीन देवगणों और ऋषियों के द्वारा की हुई वेद स्तुति को सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले इस प्रकार प्रकट करते हैं–

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयितनवे। नमस्ते असत्वश्मने येना दूडाशे अस्यसि।

कौंधती हुई विद्युत के समान तुझ परमेश्वर को नमन, गड़गड़ाते बादल के समान तुझ परमेश्वर को नमन,पाषाण समान दृढ़ परमेश्वर को नमन,जो कि दुख देने वाले पुरूष को ढा देता है नष्ट कर डालता है उस परमेश्वर को नमन है,नमन है,नमन है।

नेस्ती चूं हस्त बालाए तबक। बरहमा बर दुन्द दरवेशां सबक।

अपनी हस्ती को संत फकीर और दरवेशो ने उस महिमावान शाश्वत सत्ता में खतम कर दिया और वे सबसे आगे पहुँच गये,जो जितना अहंकार से रहित होता है वह उतना ही ऊँचाई तक चला जाता है ।

सम्पादक-सोहंग देवता

फोन–9412493683,
9368596747

RNI.No.UPHIN/2010/772, Postal Reg. No.UP/BjR-18/2010
सतपुरुष बाबा फुलसन्दे वालों के लिये सोहंग देवता ने आकाश प्रैस 1/2080, ओखला दिल्ली 9810005167 से मुद्रित कराकर गुरु गद्दी दरबार फुलसन्दा, नहटौर–कोतवाली रोड जिला–बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित किया ।
सम्पादक–सोहंग देवता,कम्प्यूटर डिजाइन–फुलसन्दा, फोटो ग्राफी–नीरज
वितरण –वरुण देवता, धानपति, गरूड़, चरणारविन्दम्

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों का हस्तलिखित संदेश –

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा।

- ऐ इन्सान! अगर तू दुनियाँ की तरफ़ से अपने दिल को हटाले तो वो ईश्वर तुझे अपनी रोशनी का महल बना ले...।
- ये सूरज का जो चिराग़ रोशन होता है ये रूई बत्ती और तेल की वजह से नहीं, आसमान की छत जो हमेशा से है ये रस्सी और सतून यानी किसी खम्बे की वजह से नहीं, ये उस परमात्मा की ताकत से है।
- फ़रिश्तों और दिव्य आत्माओं के जिस्मों से जो तेज रोशनी निकलती है वो स्वर्ग का अमृत या आबेहयात पीने की वजह से नहीं, वजूद को पैदा करने वाले रब के इश्क और दीदार की वजह से है। और इस वजह से कि वे हरवक्त उस प्रभू दोजहान के मालिक की बंदगी में जो लगे रहते हैं।
- परमात्मा का नाम लेते-लेते जो खालिस नूर में बदल गये हैं उनकी ताकत परमात्मा की तरफ से है ना कि स्वर्ग के दिव्य भोजन और गिज़ाओं की वजह से। उनके जिस्मों को उस प्रभू ने अपने महकते मुहब्बत के नूर से बनाया था, ऐसे ही उस परमेश्वर पर पक्का भरोसा, यकीन, और ईमान रखने वाले तू भयानक आग से गुज़र और आग तुझपर सलामती नेमत, ठण्डक और गुलिस्तान बन जावेगी दुनियां का ये मैदान जो वासना, स्वारथ, लालच के काँटों से भरा है इस रूह यानी आत्मा के लिये बहुत तंग है, तू नूर के उस आसमान में उड़ जहाँ सृष्टि के आरम्भ से कितने ही सिद्ध पुरुष और पवित्र आत्मायें उस परमेश्वर का स्तुतिगान करते हुए विचरण करते रहते हैं।
- सच्चे गुरू के चरणों में बैठ, उसके मुख को देखता रह कि कब वो बोले और कब ईश्वर की महिमा और स्तुति के मोती और फूल उसके मुख से झड़ें और तू उन्हें एक कुशल परिन्दे की तरह चुगले।

सतपुरुष बाबा फुलसन्देवाले

1-2-2012

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर ! तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है

नीस्त हस्ती बजुज यजदान –नहीं है किसी की हस्ती सिवा परमेश्वर के ।

मृत्यु के देवता यम सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों को जब परलोक में ले गये तो वहाँ देवताओं ने उनके मार्ग में पुष्प बिछाये। मृत्युदेव उनको स्वर्ग–नरक, देवताओं, फरिश्तों व पैगम्बरों के स्थानो में ले गये और कहा देखो ये सब उस एक परमेश्वर की आराधना करते हैं। उसी की आराधना तुम पृथ्वी पर जारी कराओ तुम्हारी प्रार्थना पर हम रोज नरक में यातना पाते एक आदमी को बक्श दिया करेंगे। फिर वे उनको परमेश्वर के आलोकित धाम में ले गये जहाँ का हाल सिवा उस परमेश्वर के कोई दूसरा नहीं जानता वहाँ से वापस आते हुए सतपुरूष ने सारे संसार के वास्ते समस्त आत्माओं के वास्ते परमेश्वर से इस तरह से प्रार्थना करी –

हे परमेश्वर ! तू जमीन-आसमान और रूहों का स्वामी है, कौन है जो तेरी बराबरी कर सके, कोई नहीं है, तेरे प्रकाश में देवता और फरिश्ते तेरी आराधना में मस्त हुए झूमते हैं, उस प्रकाश की एक बूँद तू हमें बक्श, हमें अपने करीब कर, हमारा नाम अपनी पवित्र आत्माओं में लिख, हमें अन्धेरे से निकाल कर उजाले और रोशनी में ला, जो बीमार हैं उन पर रहम कर, जो दु:खी लाचार हैं उन पर रहम कर, अपने भले-बुरों पर तू रहम कर, तेरा रहम हम पर होवे, तेरा प्रकाश हमारे साथ हो, हे परमेश्वर ! तू हमें अपनी ज्योति में विश्राम दे, जो तेरे रास्ते पर आये हैं उनके वास्ते अपना रास्ता आसान कर, दु:ख-भोग का प्याला हमारे सामने से हटा दे, हे परमेश्वर ! दु:खों के बन में भटकती हुई आत्माओं को शान्ति दे.........। एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा बाकी बचे ना कोय। तू रहे तेरा नाम रहे नहीं और रहेगा कोय॥ एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा सबमें तेरा नूर समाया। मेहर कर मैं तेरा बन्दा तेरी चौखट पे आया॥ मेरा सतगुरु साँचा शाह है करम की रेख मिटावे। भव अन्धयार से पार करके ज्योति ज्योत समावे॥ जीवन और मौत के घाट हैं दो जहाँ तेरी जोत बले। जहाँ कोई ना संग चले वहाँ तू ही संग-संग चले॥ एक तू सच्चा तेरा नाम, सच्चा एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा।

सुभा उठते ही जो परमेश्वर की इस प्रार्थना को पढ़ते हैं उनका पूरा दिन स्वर्ग के फूलों से महकता रहता है और जो रात में सोने से पहले इसे पढ़ते हैं रात भर उनके पास देवआत्माऐं उनके लिये सुभा तक प्रार्थना करती हैं ।

बेशक परमेश्वर ने इन्सान को अपनी सेवकाई और आराधना करने के वास्ते बनाया है।

Ek To Sachcha Tera Naam Sachcha

you alone are true your name is true...

Lord Yam the Lord of death took SatPurush Baba Phulsande Vale with him to the other world . there he showed him the land of Gods Heaven and hell . Then he took him to the abode of the almighty and said ,behold ! all the Gods and Angles pray to the Almighty alone . Bring the people of the world to the path of the Almighty , bring them to the path of God then , Satpurush prayed for the whole world thus _

O God ! **you are the lord of earth, sky and spirits. Who can equal you ? None. Deities and angels merry in thy light of your prayer. Give us a drop of the light. Give us your proximity. Enlist our names among your holy souls. Take us into light from dark. Bless them who are ill, bless them who are sad and helpless, bless your holy souls and evil ones too. Your grace be upon us, your light be with us. O God ! give us rest in your divine light. Make your way easy for them who come towards you. Take the cup of sadness away from us. O God ! give rest to the souls astraying in the woods of the world. You alone are true your name is true. No one but you will remain. You and your name exist forever. No one except you will be. You alone are true your name is true, your divine light shines in all. Bless me your worshipper, who has come at your door. My satguru my spiritual master, is my true lord, who undoes all my worldly deeds. He carries me beyond the darkness of the world and my soul rests in his. your light shines at the moments of life and death both. Only you accompany where no one else comes along. you alone are true your name is true...!**

Eshwar Aaradhna Esthl, GURU GADDI DARBAR
PHULSANDA, DIS. BIJNOR, U.P. **INDIA**, MO. 9412493683" 9358748356
9358698017

अ इन्सान ! अगर तू परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे तो संसार तेरी हर आज्ञा मानेगा।

पस ज़ दर्द अकनूं शिकायत बर मदार। कूस्त सूए नेस्त असपे राहे बार।

अपने दर्द की शिकायत अपने परमात्मा से ना कर दुख तेज रफतार वाला घोड़ा है जो तुझे उस सिरजनहार की तरफ ले जा रहा है जब तूने प्रभ के उस समन्दर को देख लिया तो बस अपनी रूह को वहीं पर ठहरा दे ।

परमेश्वर की राह फूलों की राह

अपने चरणों में बैठे अपने देतुल्य अनुयाइयों से सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालो ने इस प्रकार के ईश्वरीय बचन कहने प्रारम्भ किये—ना सिर्फ चाँद हमें रोशनी भी उस रब से ही मिली, के मंज़रों को हर एक दिलकशी उसी से मिली । भटक रही थी अंधेरों में गुम थी ज़िन्दगी,तो रहबरी रोशनी और मंज़िल भी उसी से मिली । उसी के ज़िक्र से है ज़िन्दगी में रंगोबू,सूखे हुए दिल के फूलों को ताज़गी उसी से मिली । नज़र में लाऊं किस लिये सूरज चाँद तारों को, हर एक चिराग़ को जब रोशनी उसी से मिली ।

ज़ीं सबब के इल्म ज़ाला मोमिनस्त
आरिफ़े ज़ाला कुदरस्त वो मोकुनस्त।

इल्म यानी ईश्वरीयज्ञान और उस परमेश्वर का सुमरन परमेश्वर के चाहने वालों की गुमशुदा चीज़ है वो अपनी गुमशुदा चीज़ को पहचानने वाले और यकीन करने वाले हैं,उनका आखरी वतन परमात्मा की निकटता है, इस लिये वो अपनी ज़िन्दगी में उसी को अपने करीब रखते हैं । दुनियां का अंधा जीव पिंजरे से पिंजरे में फिरता रहता है उसके पिंजरे का रास्ता आसमान की तरफ को नहीं है, सतपुरूष कहते हैं परमात्मा की तरफ को जाने वाला रास्ता तलाश करो अगर तुमसे हो सके तो इन पिंजरों में से निकल जाओ दुनियां की मुहब्बतें परिन्दे को पिंजरे में ले आती हैं सच्चे गुरू की मुहब्बत परमेश्वर तक ले जाती है ।

किबला जाहिद बूद यज़दाने बर,
किबलाए मुत्तिमा बूद हेमाने ज़र।

जाहिद यानी निर्मल हृदय वालों का पूजाघर वो अहसान करने वाला परमेश्वर है और लालची आदमियों का पूजाघर सोनेचाँदी को जमा करने वाली हिमानी यानी थैली है ।

किबलाए मर्दाने हक ऐमाले नेक।
किबला ए ना अहल जहले मुर्द रेग।

मर्देखुदा की इबादतगाह नेक आमाल यानी पवित्र करम हैं और जिनका परमात्मा से कोई वास्ता नहीं उनकी जगहा जहालत यानी अज्ञान और बेइज्जती से भरी ज़िन्दगी है उनको पता ही नहीं कि रोशनी की, फूलों की राह भी कोई दुनियां में है और वो है सच्चाई व परमेश्वर की राह।

किबला ए मानीवरां सबरो दरंग।
किबला ए सूरत परिस्तां नक्शो संग।

आत्मा में रोशनी वालों का पूजाघर सबर और इबादत और सकून है तो जाहिर परस्तों का पूजाघर दुनियां की चाहतें और पत्थर की तस्वीरे हैं तू उस तरफ ना देख तू अपने रब की तरफ को देख ।

ख़ाशा दरवेशे के शुद बेजिस्मो माल। कारे फ़क्रे जिस्म दारद नी सवाल।
जो दरवेश बेजिस्म बेमाल हो गया वो किसी से कुछ सवाल नहीं करता,वह खुद को हर वक्त उस मालिक कुल की चौखट पर पाता है,असल फ़कीरी जिसम को उस प्रभ की याद में घुलाना है लुटाना है नाकि दुनियां के पीछे कुत्ता बनके फिरना ।

रब तेरे सामने है

किबला बातिन नशेना जवालिमिनन।
किबला ए जाहिर परस्तां रूए ज़न।
एकान्तवास करने वाले पवित्र सन्तों का पूजाघर वो रब और दुनियां से दूरी इख़्तयार करना है और दुनियांदारों का पूजाघर दुनियां और औरत का चेहरा है ।
किबला ए आशिक हक आमद अ पिसर
किबला ए बातिल बलेस सत अ पिदर।
अ पुत्र ! परमेश्वर के चाहने वालों का पूजाघर परमेश्वर का प्यार है सतकरम हैं और अ बाबा ! धोखेबाज़ों का पूजाघर शैतान है, अगर तू तंग दिल है और दुनियां का पुजारी है तो जा अपना काम कर और मुझसे सिर ना मार ।
गर बयाबां पुर शूद ज़र वो नकूद।
बे रज़ाए हक जवे नतवां रबूद॥
अगर तमाम जंगल बन सोने और नकदी से भर जावें उस परमेश्वर की मर्जी के बिना तुझे उसमें से कुछ भी नहीं मिलेगा,
दर न ख़्वानी सद सुहू बेसाख़्ता
बेकदर यादत नुमानुद नुक्ता।
अगर तू सौ किताबें बिना रूके पढ़ता चला जावे तक़दीर के बिना एक भी नुक़्ता तुझे याद ना रहेगा ।
दर कुनी ख़िदमत नख़्वानी यक कतेब
इल्मा हे नादराह याबी ज़्जेब।
अगर तू ख़िदमत करे और एक भी हरूफ़ ना पढ़े तो गरेबां में अलूमेनादिर यानी आसमानी इल्म और नूर आसमान का तू हासिल करने वाला बन जावेगा ।
शुद ज़ ज़ेब आं कूफ़े मूसा जूफ़िशां
का फ़ज़ू आमद ज़माहे आसमा।
हज़रत मूसा का हाथ गरेबां में से नूरअफ़ज़ां हो गया यानी अपने ही दामन में से उनको रोशनी परमेश्वर की मिल गई और वो रोशनी चाँद की रोशनी से भी बहुत आगे जा पहुँची ।
कां के मी जुस्ती ज़ चरखे़ बा निहेब
सरबर आदर दस्ते मूसा ज़्जेब।
तू जिसे हैरत में भरा आसमान में तलाश करता था वो रोशनी तेरे गरेबान से नमूदार यानी प्रगट हो गई ताकि तुझे मालूम हो जावे के बुलंद आसमान इन्सान के अलूम का अक्स है यानी आसमान में वही है जो तेरी प्रकाशित आत्मा में है,यानी अपने दिल की सफाई कर, सच की राह पे चल, गुरू की बात मान, अपने दिल शैतान और बुरे दोस्तों से बाज़ आ, रब तेरे सामने है ।

मुर्गे जज़्बा नागहां पर दज़ उश। चूं बदीदी सुभा शम्मा आगे बुकुश।
सबर कर, एक दिन ये परन्द घोंसले से उड़ेगा और जब सुभा होगी तो चिराग़ को बुझा दिया जावेगा और तेरी रोशनी आसमान की रोशनी में जा मिलेगी ।

सतोगुणी बुद्धि

प्रभु सतपुरूष ने कहा –

ने के अव्वलदस्ते यज़दाने मजीद।
अज़ दो आलम पेश्तर अक्ले आफ़रीद।

दुनियां बनाने वाले उस परमेश्वर ने दुनियां जहान को बाद में बनाया उन सबसे पहले अक्ल को पैदा किया, एक आदमी ने ख़्वाब में एक रद्दी बेचने वाले की दुकान में कुछ बहुत पुराने कागज देखे जिन पर ख़ज़ाने का नक्शा बना हुआ था जागने पर वह उसी दुकान पर गया और वे ही कागज उसे मिल गये उनको लेके वो वीराने में चला गया, लिखा था कि इस गुरू की समाधि के पास खड़ा होके शहर की तरफ से पीठ करले और जंगल की तरफ को मुंह करले और तीर छोड़ बस यहीं ख़ज़ाना है उसने ऐसा ही किया खोदा पर वहाँ कुछ ना पाया, लोगों को बात पता लगी राजा को पता चला उसने वो कागज आपने हाथ में लेलिया और जगहा जगहा कुवे खोद डाले पर खजाना ना निकला, वो पहले वाला आदमी ख़ज़ाने की तलाश में पागल जैसा हो गया, एक रात ख्वाब आया अ बेवकूफ वो ख़ज़ाना उस मालिक की बन्दगी है जिसे तू जमीन में तलाश रहा है जा दुनियां से मुंह फेरले और परमेश्वर की याद में लगजा वो कभी खतम ना होने वाली दौलत है जानवरो जैसी अकल छोड़ और वो अकल सच्चे गुरू से हासिल कर जो तुझे असल खजाने तक यानी असल मालिक के दर तक पहुँचादे ।

अैं सखुन पैदा वो नापहा नसत वो बस
के ना बाशद महरमे अनका मगस।

ये बात बहुत खास है कि अनका पक्षी जानवर को भी लेके आसमान में उड़ जाता है उसकी मिसाल मक्खी से नहीं दी जा सकती सच्चा गुरू अनका पक्षी है जो कितनी ही रूहों को उस परमेश्वर के द्वार तक ले जाता है और दुनियांदार मक्खी जैसे हैं जो दुनियां की मिठास और गंद पर यानी लालच में पड़े भिन भिन किया करते हैं, जा उन मक्खयों की सोहबत से बच और आसमानी अनका परन्द तलाश कर ।

जां के मिल्लत फ़ज़्ल जोयद या ख़लास
पाकबाज़ अन अन्द कुरबाने खास।

लोग पुण्य ढूंडते हैं या मोक्ष का रास्ता मगर जो पवित्रआत्मा वाले हैं वे उस रब को ढूंडते हैं वे उसकी मुहब्बत पर कुरबान हैं ।

न खुदारा इम्तहाने मी कुनद।
ना दरे सूद वो ज़ियाने मी ज़नद।

ना वो अपने परमेश्वर को आजमाते हैं ना लाभ हानी का दरवाज़ा खटकाते हैं और दुनियांदार लोगों का ये हाल है कि फ़ायदा कहां से हो ? नुकसान कहां से पूरा हो ? बस उनकी ये भगती है ?

बैनद अन्दर ज़र्रा ख़ुरशीदे बका। बैनद अन्दर क़तरा ए कुल बहरे रा।
वो अमरता के सूरज को कण में देख लेता है,सब समन्दर को एक कतरे में देख लेता है जिसको परमेश्वर नज़र देदेता है ।

दुनियां को कभी दोस्त और गुरू को कभी दुश्मन ना समझ।

सतपुरूष ने कहा–
नेस्त अज़ आशिक कसे दीवानातर
अक्ल अज़ सौदाए ऊ कुरस्तो कर।
आशिक से ज्यादा कोई दीवाना नहीं है अक्ल उसके जनून से अंधी और बहरी है पर दुनियां के दीवाने बेशुमार हैं और उस रब का आशिक कोई कोई है, ये आम दीवानगी नहीं है हकीम इसका इलाज नहीं जानते, मोती बरसाने वाले उस समन्दर को जोश में ला, मैं रब के इश्क में गर्क ज़िबरील फ़रिश्ता हूँ और तू मेरा सिदरा यानी वो पूजाघर जहां असंख्य फ़रिश्ते उस परमेश्वर की आराधना किया करते हैं,मैं बीमार हूँ और तू मेरा मसीहा है, अ बन्दे जब तू उसका हो गया तो समुद्र तेरी मिलकियत है,वो दीवानगी तेरी बारी थी और अब तेरे परमेश्वर की बारी है तुझे लबरेज़ करने की, जो उसका हो गया वो भी उसका हो गया।
चूं तू आने ऊ शुदी बहर आने तुस्त
गरचे ई दम नौबते बहर बहराने तुस्त।
मैं सागर के किनारे बैठा हूँ अपने रब की याद के साथ हूँ,मैं अपने रब के साथ रात गुजारता हूँ अपनी बात तू खुद जाने के तू कहां है तेरा दिल कहां है किसके साथ है ?
या इबियत इन्द रब्बी ख़्वानदी।
जो तू आइने में देखता है सच्चा गुरू उसे ईंट में देख लेता है जा और सच्चे गुरू का दामन पकड़ उसकी आँख से दुनियां को और दुनियां के रब को दोनो को देखले ।
दुश्मने आब सत पेशे ऊ मुजनब
दरना संगे जहले ऊ बशकत ख़ुनब।
दुनियां के सामने अपने ईश्वरीय प्यार को ना कह अपना मुंह बन्द रख उसके हाथ में जहालत का पत्थर है वो तेरे ज्ञान के घड़े को फोड़ कर तेरे पानी को बहा देगी दुनियां और परमेश्वर की राह एक दूसरे के खिलाफ़ हैं दुनियां से परहेज कर अगर तू अपनी सलामती चाहता है, तू अपने होठ ना हिला, जहाँ भी रब को प्यार करने वाला दिल है सबर उसे साफ़ यानी पवित्र करने वाला है,सबर का हाथ पकड़ले ।
के सूद दरया जपू सग नजस।
के सूद खुरशीद अज़ तुफ़ मुन्तिमस।
कुत्ते के मुंह से दरया कब नापाक यानी अपवित्र होता है ? सूरज फूंक माने वालों से कब बुझा है ? तू अपने परमेश्वर के इश्क में दरया बनजा, उसके इश्क में तपने वाला सूरज बनजा, दुनियां को साथ ना ले और गुरू का दामन ना छोड़,दुनियां को दोस्त और गुरू को कभी दुश्मन ना समझ ।

खेमा वीरान सत वो बस कुश्ताए दतद। ऊं बहाना कुन्द ता दर फिदत।
जिस्म का खेमा वीरान है और खूंटी टूट गई है तो वो बहाना ढूंडता है कि गिर पड़े और रूह आसमान पर अपना सामन लेकर चली जावे । ये हालत उनकी है जिन्होने अपनी रूह का बसेरा उस परमब्रह्म को बना लेते हैं ।

अगर वो परमात्मा ना होता

गर ना बदे उ निया बेदे बिहार।
हैउते माही वो दुर्रे शाहोवार।।
अगर वो परमात्मा ना होता तो समुद्र को हासिल ना होती मछली और सच्चा मोती और सच्चे गुरू को वो ही नूर परमात्मा ने दिया है ये नूर ना होता तो दुनियां ना होती और फरिश्ते ना होते और ना होते बेल बूटे दुनियां में ।
गर ना बूदे ऊ निया बेदे ज़मी।
दरदरो ना गंज वो बैरो आसमी।।
अगर वो ईश्वर ना होता तो ज़मीन के अन्दर ना होते ख़जाने और ना बाहर उसे हासिल होते गुलाब और चमेली ।
रज़ कहा हम रिज़्क ख़्वाराने देअन्द
मेवाह लबे खुश्के बाराने देअन्द।।
खाने वालों के लिये अन्न और जल मेवे और फल भी उस परमात्मा की वजहा से है सब मेवे उसकी बारिश के प्यासे हैं फकीरों को रूहानी और बादशाहों को दुनियां की दौलत मिली है इन दोनो से कहना ये है कि जब कुदरत ने तुमको ये सब दिया तुम उसकी राह में निछावर करो
देवमी आ दर्द पेशे होशे मर्द।
वसोसा ता खुफ़्या गर्द दमाये ज़गर्द।।
शैतान मर्दे खुदा की अकल के सामने लाता है बहुत से भटकाव ताकि सच का चाँद गरद में छुप जाये और राही भटक जावे ।
के च निस्बत देवरा बा जबरईल।
के बूद बा ऊ बसोहबत हम मुकील।।
शैतान को पवित्र फरिश्ते ज़िबरील की क्या मिसाल है कि वे दोनो एक साथ रहवें वो परमेश्वर का दोस्त है और वो परमेश्वर की राह से लोगों को भटकाने वाला है ऐसे ही सच्चे साधकों को दुष्ट दुनियांदारों की सोहबत नहीं करनी चाहिये उनसे दूर ही रहना ठीक है ।
मन नीम दर अमरद फरमा नीमख्वाम।
ताबीन यशम मन अज़ तश्नीएआम।।
मैं परमात्मा के हुकम को जानता हूँ और उसमें अधकचरा और कच्चा नहीं हूँ कि लोगों के ताने कसने की फिकर करूं और बदनामी से डरूं ? हमारा आम और हमारा खास उस रब का हुकम है हमारी जान मुंह के बल उस रब के हुकम में चलना मेरा काम है और मेरी जान तो बस उसी के हाथ में है मैं लोगों की बाते बनाने से बिल्कुल अलग और बेनियाज हूं मेरा मुंह तो अपने रब की तरफ है,हम सैकड़ों बेवकूफ लोगों का बोझ बरदाश्त करते हैं उस मालिक की राह में और उसके प्यार में । ना हमें दुनियां की रंगत चाहिये और ना इसकी खुशबू हमें तो उस रब की मुहब्बत चाहिये ।

मोर बरदाना चरा लरजां बूदे। गर अज़ां यक दाना ख़िरमन दर बूदे।
चींटी दाने के बारे में क्यों लड़ती अगर उस दाने के बजाय वो खलिहान में होती ? अगर इन्सान परमेश्वर के ख़जानो को देख लेता तो दुनियां की दौलत के पीछे कुत्ते की तरहा ना फिरता ।

उसकी राह में

अज़ हमे वाहम वो तसव्वरात दूर।
नूर नूर नूर नूरू नूरे नूर॥
हमारा चलना उसकी राह में वहाँ तक है जहां कि उस रब के मकान के लिये रास्ता नहीं सिवाय परमात्मा के चाँद के नूर की चमक के और तमाम वहम और बेकार के खयालों से हमारा दिल दूर है, वहाँ तो फकत नूर ही नूर, नूर ही नूर, नूर का नूर वो खुद परमात्मा ही है । तुझको ये कहता हूं कि बुरो से भी अच्छा सलूक कर बुरे साथी को भी निभा तू सबर की आदत डाललले ताकि तू तंगी का भार खुशी से बरदाश्त करले बुरे वक्त में सबर रख,सबर खुशी और शन्ति की कुन्जी है । जब तू कमीनो को बरदाश्त करने लगेगा तो तू परमेश्वर की राह के नूर में पहुंच जावेगा क्योंकि संतों ने अवतारों ने और पैगम्बरों ने ऐसे कमीनो से बहुत तकलीफ उठई है और सबर किया है और उन सांप बिच्छुओं से बहुत तकलीफ में रहे हैं और जाहिर में ये तकलीफें हैं पर हकीकत में रूह की रोशनी को बढ़ाने वाली हैं, क्योंकि परमात्मा अपने हुकम से अपने चाहने वालों को रोशन करना चहता है। उस परमात्मा जैसा कोई नहीं है उसने सच्ची आत्माओं को अपना आइना बनाया और रोशनी के साथ अंधेरे को पैदा किया ताकि सफेद और सियाह के बीच लोग उस बेमिसाल परमात्मा को तलाश करने का खयाल हमेशा दिल में रखें और दुनियां की बदकारियों बेकारयों को और नीचता को हमेशा समझते रहें । बस या तो तू बेकार कांटों के रास्ते पे जा और बरबाद हो और चाहे रोशनी के रास्ते पर जा और परमात्मा की मुहब्बत और अमृत को हासिल करले ।

हेच वहमे बेहकीकत के बूद।
हेच कुल्बे बे सही के रूद॥
बगैर हकीकत के कोई वहम कब होता है कोई खोटा बगैर सही के कब चलता है ।

के दरोगे कीमते आरद बेज़रासत।
दर दो आलम हर दारोग अज़ रास्त ख़ास्त।
सच्चाई के बगैर झूठ के दाम कब उठते हैं दोनो जहां में हर झूठ सच से बना है,इस दुनियां की सोहबत को तूफान समझ और गुरू को इस कश्ती का निगेहबान समझ शेर और सांप से ना डर दोस्तों और अपनो से बच जो मुलाकात में तेरे वक्त को खराब करते हैं उनकी यादें तेरी आत्मा की रोशनी को चरती हैं, हर इन्सान का ख्याल प्यासे गधे की तरहा जिसम के प्याले से फिकर का शरबत चूसता है और उसे संसार में खाली और चैन से नहीं रहने देता ।

ताब कीं बारद नगीरद मुत्तसिब। आवे खुद रोशन कुन अक्नू या मोहब।
मौत तुझे अचानक ना पकड़ले अपने पानी को साफ़ करले,अपनी आत्मा की रोशनी पर से कोहरा हटाले ।

रात की सियाही

अज़ सवादे शब बरू आरद निहार।
वज़्कफ़े मासिर बरोया निद अयार॥
वो रात की सियाही से दिन जाहिर करता है वो तंगदस्त के हाथ से मालदारी पैदा कर देता है वो रेत को आटा और पत्थरों को अपने दोस्तों का दोस्त बना देता है ।
कौले हक राहम ज़हक तफ़सीर जू वो।
हैं मखा़जा़ज अज़ गुमां अ या वो गो।
परमात्मा की बातों को उसी से सुन अ बेहूदे अपने गुमान से बकवाद ना कर जो गिरहा उसने लगाई है उसे वो ही खोलता है अ परमात्म मुझे माफ कर जब तूने ही दरवाज़ा बन्द किया है तो तू ही इसे खोल मैं प्रार्थना करने में बेअकल हूँ मेरी अकल दुनियां के पानी में डूबी पड़ी है ये तेरी तरफ देखने में लाचार और मजबूर है । अ रब हमें आंख अता करदे जिस रात को हम काली समझते हैं वो तेरी याद से नूर है । सुन तेरे मिलने वालों ने उन चुगल खोरों ने तेरी उस तरी को चूस लिया जो अमृत से भीगी हुई तेरी आत्मा में परमात्मा से तुझे मिली थी ऐसे मक्कारों को दूर से देखले ।
खा़के मारासा नया पालेज़ कुन
हेच ने रा बारे दिगर चीज कुन॥
हमारी मट्टी को दोबारा सरसब्ज़ करदे नाचीज़ को दोबारा चीज़ करदे ।

अ बकर दह यार हर अग़्यार रा।
वे बदादह ख़िलअते गुलखा़र रा॥
अ वो ज़ात अ रब जिसने कि गैरों को हमारा दोस्त बना दिया और अ वो कि जिसने काँटे को फूल का लिबास अता फरमाया तू मेरी मट्टी में फिर से फूल खिलादे । जब मेरा दिल तेरे नूर से खाली है तो पता चलता है कि ये सब मेरे गरूर और खुदी की वजहा से है । मैने देखे को अनदेखा कर लिया सिवा इस दिल के मैं कुछ नहीं रखता कि तेरे सामने रख सकूं ? मैं बेहोशी में हूँ अ मेरे मेहेरबान रब मुझपे रहम कर । मैने तकलीफों को सहा है मुझे राहत बक्श दे मैं खाली हाथ तेरी खुशामद करता हूँ तू मेरी सुनले ।
हर के उद दूर सत दूर अज़ रूए उ।
काज़्मायद कूवते बाज़्वी उ॥
जो उससे दूर है उसके चेहरे से दूर है कि अपनी बजू की ताकत आजमा रहा है,तू जितना दौड़ता है अपने रब से दूर भाग रहा है रूकजा और वो तो ये रहा तेरी रग से भी करीब नादान आदमी भटकता है वो अपने गुरू की पूरी बात नहीं समझता और भागा चला जाता है और पैर तोड़ लेता है । अपने रहबर की बात मान उससे धोखा ना कर कहीं तेरी तकदीर तुझे धोखा देवे ?

पस ख़ुदी रा सर बुब्र वा जुल्फ़कार। बेख़ुदे शू फ़ानी वो दरवेश वार।
तू तलवार से अपनी खुदी यानी अभिमान का सर काट दे और दरवेश की तरहा उस रब में फ़ना होजा अपनी रूह उस सच्चे महबूब को सौप दे ।

एक जल परी

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले कहते हैं–

हर के बर शम्मे ख़ुदा आरद पिफू।
शम्मा के मीरद बसूजद पूजे ऊ।

जो खुदाई शम्मा पर फूंक मारता है शम्मा कब बुझती है फूंक माने वाले का मुंह जल जाता है अर्थात परमेश्वर का नाम लेने वाले सच्चे लोगों से बैर ना कर अगर तू ऐसा करेगा तो तू खुद बरबाद हो जावेगा ।

गर न बूदे ऊ नया बेदे फ़लक
गर्दिशे नूरो मकानी ए मलक।

अगर वो परमेश्वर ना होता तो आसमान में सितारे कैसे गर्दिश करते ? नूर कहाँ से आता ? और फ़रिश्तों का घर कौन बनाता

हर यतीमे रा के सुरमा हक कशद
गर्द उदरे यतीमे बारशद।

जिस यतीम अनाथ आदमी की आँख में वो परमेश्वर सुरमा लगादे वो परमेश्वर से आसमानी रहस्य को पाने वाला और सारे संसार को रास्ता बताने वाला बन जाता है वो संसार के हर आदमी पर गालिब हो जाता है यानी छा जाता है ।

हक हमी ख़्वाहिद के तू जाहिद शवी
तागरज़ ब गुज़ारी वो शाहिद शवी।

वो प्रभ चाहता है के तू सच्चा चाहने वाला उसका बन जावे गरज छोड़दे और उसके रहस्यों में उसके पर्दे में शामिल होजा ।

हम हमी गोयद गरज़ रा तर्क कुन
ता कबूल उफतद तुरा बामा सख़ुन।

परमेश्वर कहता है अपनी गरज़ यानी मतलबों को छोड़कर मेरे पास आ ताकि मैं तेरी रूह को अपने नूर में कबूल कर लूं, गरज़ आँख का वो परदा है कि जिसके रहते आँख सही सही नहीं देखती, अ हमारे रब ! हमारे नूर को अपने सामने मुकम्मल करदे यानी हमें पूरणता को पहुँचादे हमें रूसवा करने वाले हमारे नफस से बुराइयों से छुड़ा दे,तेरी दूरी अ महबूब ! दर्द से भरी हुई है ।अ इन्सान ! दुनियां के तमाम हुनर तेरे गले में मूंज की रस्सी है जो कभी भी तेरा गला घोट सकती है मरने के बाद ये हुनर काम नहीं देते ना इनसे कुछ मदद मिलती है, तू रात में दिल के अंधेरे में अपने रब के बेपनाह नूर को देखले ।

हर कशे के प ब पर्दर शरेमा।
बाज़ कुन दो चश्म सूए मा बया।

सब परदों को उतारदे दोनो आँख अपने रब की तरफ को खोल दे हमारी तरफ आजा, एक जल परी को मैने देखा जिसने रात में अपने मुंह से एक मोती निकालकर समुद्र के किनारे पर रखा और उसकी रोशनी में नाचती फिरी, अचानक एक कीचड़ भरी लहर आई उसने मोती को ढक दिया वो रोती फिरी, मोती को ढूंडती फिरी पर ना पाया, वो आज भी उसे ढूंडती है, ये परी आत्मा है, मोती उसका ईश्वर प्रेम है कीचड़ दुनियां की ख़्वाहिशे हैं ।

कलाम मा हस्त वहदते अस्त। गैर बीनी आं बुत अस्त।
मेरे हाथ में मेरा कलाम सिर्फ़ परमात्मा के लिये है और किसी के लिये नहीं, इसमें जो कुछ और देखता है वो ऐसा है जैसे परमेश्वर के अलावा कोई किसी बुत को देखे और सच की राह से भटक जावे सच्चे गुरू को अपनी आत्मा में साथ रख शैतानो का साथ छोड़दे रब की चौखट पे अपना सर रखदे ।

हस्ती का सामान

अ फुगां अज़ यारे नाजिन्स अ फुगां
हमनशींने नेक जोयद अ महमां।
बदकार दोस्तों से बच अ बजुर्ग नेक साथी तलाश कर ।
हैं मशु सूरत परस्त दायेंमगू
सर्रे जिन्सयत सूरत दरमजू।
तू सूरत परस्त मत बन हमजिन्स होने की हकीकत ना तलाश कर, वो एक बेजान चीज है सूरत पत्थर की तरहा है जिस्म दाने की तरहा है और जान चींटी की तरहा है जो दाने को लिये फिरती है,तू इस दुनियां को अपना ठिकाना ना बना क्योंकि कितनो ने ही इसे अपना घर समझा और वो उजड़ गये पर ये दुनियां आज भी वैसे ही चल रही है ।
अ खुनक चश्मे के अकल सतश अमीर
आकबत बीं बाशदो जबरो करीर।
आराम से वही हैं जो अकल से काम लेते हैं आँख केवल सफेद सियाह देखती है अकल ही हकीकत की तमीज रखती है, आँख तो फूलों पर शैदा हो जाती है पर अकल देखती है कि इसमें जहरीला कीड़ा है अकल से काम ले केवल आँख से नहीं ।
नैनबी फ़रमूद जूदो महमदा।
साखे जन्नत दाँ बदुनियां आमदा।
पैगम्बर ने कहा सखावत यानी दान और नेकी यानी आदमी की अच्छाइयां जन्नत की शाख़ है टहनी है और ये शाख़ जन्नत से झुकके दुनियां में आ गई है जो इसको पकड़ लेता है वह इसको पकड़ कर जन्नत में चला जाता है और फ़कीर यानी परमात्मा से मुहब्बत करने वाले सच्चे हृदय वाले लोग फ़रिश्तो में से हैं वे रोज आसमान पर जाते और आते हैं ।
ला उबाली ला उबाली आ वरद
जां के जिन्स हम बूंद अन्दर ख़िरद।
लापरवाह आदमी लापरवाह को लाता है और रब का मुहब्बती अपने जैसे को लाता है क्योंकि वो अकल में एकसे होते हैं ।
हर तरफ़ चह मी कशद तन रा नज़र
बेख़बर रा के कशानद बाख़बर।
जिस्म को हर तरफ क्या खींच रहा है ? नज़र , बेख़बर को कौन खींच रहा है ? बाख़बर । अगर तेरा परमेश्वर तुझमें फ़रिश्ते जैसी सिफ़त रखदे तो तू पक्षी की तरहा आसमान का रास्ता ढूंडे ।
पस तू हम उनजा शमरो अल्लाउगू
गर दिलेदारी बर्द दिलदार जू।
अगर कहीं घर लेना हो तो पहले पड़ौसी को देख ले तू दिल रखता है तो दिलदार को यानी पवित्र हृदय वाले गुरू को तलाश कर ताकि वो तुझे रब से मिलादे ।

बस बदीदी मुर्दा अन्दर गोर तू। गोर रादर मुर्दा बीं अ कोर तू।

तूने बहुत से मुर्दे कबर में देखे हैं, तू इस जिस्ममुर्दा में कबर को देखले,कबर की ईंट अगर मुर्दे पर गिर पड़े तो वो कब ईंट से झगड़ता है, कुवे से निकलकर किले पर आजा ।

उसकी रोशनी में

अ बसाद गोर ख़ुफ़ता ख़ाक वार
बज़े सधा हया बनफ़ा वो इब्तशार।

बहुत से कबर में सोये हुए जिन्दों से बेहतर हैं उसकी रोशनी में।

साये बूद अदो ख़ाकश सायेमन्द
सद हज़ारा ज़िन्दा दर साया दयन्द।

वो साया था और उसकी मट्टी खुशबू हो गई जिसमें लाखों लोग उसके रौशन साये में हैं। वो जिसमें अपना नूर रख देता है उसे रौशनरुह कर देता है। तू अपनी कमली को अपने नूर का नकाब बनाले।

बेचनी आइना ई खूबी ए मन
बर नताबद ने ज़मी वो न ज़मन।

आईने के बिना मेरे नूर को कोई बरदाश्त न कर सकता था न ज़मीन ना ज़मीन वाले

रोजने चशमकम जमा वीरान शद सत
लीक मह चूं गंज दर वीरान शदस्त।

मेरी आँख की खिड़की चाँद से वीरान हुई है लेकीन चाँद ख़जाने की तरहा वीराने में आ गया है, मैने वो पाया जो किसी को ना मिला ना मिलेगा आगे, मेरे वीरान दिल में उस आसमानी प्रीतम ने आके घर बना लिया जिसके लिये तरसती थी मेरी रूह।

के गज़ारत द गंज कां वीराना अम
याद आरद अज़ खाक़ वो ख़ाना ए अम।

ख़ज़ाना कब मौका देगा कि मेरा वीराना मेरे घर और महल को याद करे, मेरे वीराने में उसके हुस्न का दफ़ीना है, उस रब को पाने के लिये बेशक तू अपनी दुनियां को वीराना बनादे तब वो तुझे मिलेगा ।

इश्क वरजी आं दरीचा करदनस्त
कज जमाले दोस्त सीना रोशनस्त।

इश्क करना वो खिड़की बनाना है जहां से उसका नूर तुझ तक आवे क्यों के दोस्त के हुस्न से सीना रोशन है, अपने दिल की खिड़की रब की तरफ को खोल ताकि उसके फैज़ो नूर से तू लबरेज़ हो सके और फ़रिश्तो में सैर कर सके,खोलने का मतलब ये है के उस रब से इश्क कर।

चूं शुदी ज़ेबा बदां ज़ेबारसी।
के रेहानद रूह रा अज़ बेकसी।

जब तू हसीन हो जायेगा तो तू उस हसीन तक पहुँच जावेगा जो रूह को बेकसी से छुड़ा देता है ।

शह गुलामे उशद अज़ इतमे हुनर।
मुल्के इलम अज़ मुल्के हुस्न आं सूदातर।

इल्म और हुनर की वजहा से बादशाह गुलाम है,इल्म की सल्तनत हुस्न की सल्तनत से बहुत ऊँची है,बेशक वो ही है जिसने तुम्हें मट्टी से पैदा किया फिर एक मुद्दत तय करदी कि कब तक तुम्हारे लिये दुनियां है और कब तुमको रब का रास्ता मिलेगा, कब तलक तुम्हारे लिये परेशानी और कब तक होगी आसानी ।

खन्दहां दर गरेहां आमद कतीम। गंज दर वीरानहां जवा अ सलीम।

हंसियां और खुशियां रोने में छुपी हुई हैं,अ भोले ! अ भाग्यशाली ! ख़जानों को वीरानो में तलाश कर,ये ही वो जगहा है जहां संसार से उदास हुए संत ईश्वरीय ख़ज़ानो को पाते हैं ।

दरया का पानी

दरया के पानी में जैसे चाँद चमकता है
ऐसे ही मेरे दिल में तू दिन रात चमकता है।

दरयाव के पानी पे जैसे चाँद की छाया पड़ती है ऐसे ही इस संसार रूपी समुद्र पर उस परमेश्वर का प्रकाश मंडराता है, सतपुरूष उसे दिनरात अपने सीने में देखते हैं और जाहिल आँख होते भी उसे नहीं देखते, अ मेरे परमेश्वर तू रात दिन मेरे भीतर चमकता है, जिसकी चमक पर खिंच खिंच कर आसमान से फ़रिश्ते और पवित्र आत्मायें ज़मीन पर आते हैं।

मैं दरया तू चाँद मेरा मेरे पानी पे तेरी छाया।
मेरे घर मेहमान बनके थोड़ी देर को तू आया।

मैं दरया हूँ तू मेरा चाँद है, तेरी छाया इस पानी पर पड़ती है जैसे चाँद रात भर दरया का मेहमान है ऐसे ही एक रात के बराबर मेरी ज़िन्दगी है, जिसमें तू मेरा मेहमान मेरा हमसफ़र और मेरा मेहेरबान है ।

आदमी का जिसम है क्या आत्मा का साया है
क्या है ये आत्मा परमेश्वर का साया है।

आदमी रूह का साया है और रूह उस परमात्मा का साया है यानी ये दुनियां और इन्सान उस परमेश्वर के साये का साया है जोकि इन आँखों से दिखाई देता है ।

जो उस प्रभ की याद में हैं वे देवताओं के साये हैं
कड़वी बात जो बालते उनपे पिशाचों के साये हैं।

पवित्र आत्मा वालों की पहचान ये है कि वो रातदिन उस परमात्म का नाम जपते हैं और नेकी के काम करते हैं और जो कड़वी बाते कहते हैं धोखे के जाल बिछाते हैं वे बुरी आत्माओं के साये हैं और बुरे कामों में ही उनकी जिन्दगी का चैन है

तेरे ख़्याल में परमेश्वर मेरी हस्ती फ़ना हो गई
ढूँडते ढूँडते बूंद तुझे समन्दर में कहीं खो गई।

तेरी याद में अ मेरे परमेश्वर ! मेरी ज़िन्दगी गुम है, मेरी आत्मा रोशनी की बूंद की तरहा तुझ रोशनी के समुद्र में तुझे खोजने घुसी और फिर खुद को ही ना पाया कुछ ना पाया सिवा तेरे ।

फूल खिले हैं रस्तों पे कौन यहां से गुज़रा है
तू नहीं तो तेरा साया मेरे दिल से गुज़रा है।

जिन रास्तों से मैं गुज़रा हूँ वहाँ फूल खिले हैं निश्चय ही तूने ही मेरे परमेश्वर इनको खिलाया है, तू इधर से गुज़रा है या तेरे चाहने वाले तेरा नाम लेने वाले तेरे दोस्त इधर से गुज़रे होंगे ?

सरसों के दाने में शहर खुदा का नाचते लाखों
फरिश्तेलाखों ऊँट सुईं के रोझन में से हैं गुज़रते।

इस आत्मा की मिसाल सरसों के दाने जैसी है रोशनी के उस दाने में सारा आलम और जहान बसा है लाखों अहंकारी मनुष्य ऊँट जैसे राजे महाराजों को परमात्मा तकलीफ़ें देके उनके गुमान अभिमान को तोड़कर उनको धूल में मिलाता रहता है उन्हें सुईं के रोझन में से निकालता रहता है अतः अहंकार ना करना ।

प्रभ कहीं तू ढूंडे कहीं कौन तुझे समझावे
चाँद तो आसमान में पानी में नज़र आवे।

परमात्मा कहीं है ढूंडने वाले बाहर मंदिर मस्जिद तीरथ आदि में उसे खोजते हैं वह तो तेरे जिसम के भीतर तेरी आत्मा के मोती में छुपा है,चाँद आसमान में है पर पानी में दिखाई देता है ।

चश्महां रा चार कुन दर ऐतबार। यार कुन बा चश्मे खुद दो चश्मेयार।

नसीहत हासिल करने में आँखों को चार बनाले,यार की दो आँखों को अपनी आँखों का साथी बनाले ताकि तू वो देख सके कि जिसे तू कभी भी देख नहीं सकता, वे आँखें गुरू की आँखें हैं, उन आँखों से उस छुपे हुए परमात्मा को देखले, गुरू से कभी बेरूखी ना कर।

राबया बसरी चाँदनी रात में घर के बाहर सुईं खोज रही हैं रस्ता चलते से कहा जरा मेरी सुईं खोजने में मदद करो बहुत देर होई वो बोला सुईं कहाँ गिरी थी ? कहा घर के भीतर गिरी थी वो आदमी हैरान हुआ फिर बाहर क्यों खोज रही हो कहा बाहर चाँदना है जो अच्छा लगता है भीतर अंधेरा है कि दिल घबराता है ? ऐसे ही लोग हैं आत्मा में उसे नहीं खोजते । एक रानी का हार पानी में गिर गया बहुत गोताखोर आये हार पानी में पड़ा चमकता था पर जब नीचे हाथ डालते तो सिवा मट्टी के कुछ हाथ ना आता और जब पानी ठहरता हार फिर चमकने लगता सब परेशान हो गये । एक फकीर उधर से गुजरा सारा माजरा देखा उसने कहा तुम पानी में ढूंडते हो वो देखो हार पेड़ पर रखा है कोई पक्षी उसे लेगया होगा उसकी परछाई पानी पर पड़ती है और गाताखोर परेशान हैं किसी की भी नज़र वहाँ ना गई ।

फिकर करे सौ साल की दरवाजे पे मौत खड़ी
आज के दिन को सवांरले तुझको बरसों की पड़ी।

सौ साल की फिकर है मौत सामने है आज के दिन का इन्तजाम करले, एक राजा परेशान था कि मेरे यहाँ चार पीढ़ी तक खाने को है पाँचवी पीढ़ी का क्या होगा ये सोचकर उसकी नींद उड़ गई वजीर होशियार था उसे एक संत के पास ले गया उसके लिये वजीर कुछ रेटी ले गया था संत ने सारी रोटियां बाँट दीं, राजा ने कहा महाराज कल के लिये भी कुछ रखलो ? बोला कल की हम परवाह नहीं करते हमारी चिन्ता करने वाला परमात्मा है राजा की आँख खुल गई

खा खाके ठोकरें आदमी चमकता है
खुद में झाँकके देख प्रभ का गुलिस्तान चमकता है

आदमी ठोकरें खाके प्रकाशित आत्मा होता है अपने भीतर तू आत्मा में देख वहां परमेश्वर का गुलशन है जिसमें देवता घूमते रहते हैं ।

पानी पे कोई डले मारे चाँद है आसमान में।
कोई कुछ भी कहे मुझे मैं तो प्रभ तेरे ध्यान में।

हे परमेश्वर ! कोई मुझे भला कहे या बुरा कहे मेरा ध्यान तो तेरे नूर में समाया है ये शरीर पानी जैसा है इसपर कोई कितने डले मारे चाँद तो आसमान में है उसपे कोई फर्क नहीं पड़ता ।

मौत नमक की खान है सबको करदेगी एकसा।
क्या कीकर है क्या गुलाब
मट्टी में मिलके है एकसा।

मौत ऐसी है जैसे नमक की खान उसमें सब कुछ गल के पानी बन जाता है

चूं आहंग रफतन कुनद जाने पाक
च बरतख़्त मुर्दन च बर रूए ख़ाक।

कोई सोने चाँदी के तख्त पर मरे या खाक पे मौत सबको एकसा कर देती है ।

जिसम के पहलू में रूह है रूह है रब के पहलू में
देखले दुनियां है या रब कौन है तेरे पहलू में।

इस रूह यानी आत्मा से शरीर जिन्दा है और आत्मा में जो हरकत है वो उस परमात्मा की वजहा से है तू ये देख तूने किसे अपनी बगल में ले रखा है उस रब को या धोखेबाज़ दुनियां को

अ बुलबुल ख़मोश रह फूल की आवाज़ सुन
अ मेरे दिल ख़ामोश रह अपने रब की बात सुन।

अ आत्मा रूपी पक्षी चुप रह और उस परमेश्वर सच्चे बादशाह को सुनने और जानने की कोशिश कर बकड़ बकड़ करने में तो तेरी सारी उमर ही जाती रहेगी तू खाली रह जावेगा ।

कभी बुलंदी कभी पस्ती में हैं तारों की गर्दिशें
बादशाही कभी फ़कीरी हैं नसीब की गर्दिशें।

यार बाशद रहा रा पुश्तो पनाह। चूंके नेको बंगरी याररस्त रहा।

यार रास्ते का मददगार होता है,जब तू गौर करेगा तो देखेगा कि यार रास्ता है,यानी बिना गुरू के तुझे परमेश्वर के रास्ते में वो परमात्मा कभी दिखाई ना देगा, जब तू उसके चाहने वालो में पहुँचे तो उनके बीच अपनी आत्मा को रोशनी से ढक कर बैठ ।

नसीब का उतार चढ़ाव सबको देखना पड़ता है राजो महाराजो को भी और फकीरों को भी कभी अच्छे दिन आते हैं तो कभी बुरे ।

जो प्याला मैंने तुम्हें दिया बजुर्गों के घड़े से मैने भरा। नाप नाप के उस प्रभ ने एक एक प्याला भरा

जो बातें मैं तुमको बता रहा हूँ ये बातें मुझसे पहले कितने ही संतों ने कही हैं मैने अपना प्याला उनके घड़े से भरा है ताकि तुमको वो ईश्वरीय रस मैं पिला सकूं ।

ऊँचे पहाड़ की गुफ़ा में एक परिन्दा गुम है कहीं
आदमी है सोया हुआ रूह उड़ती है कहीं।

संत जन उस परमेश्वर रूपी पहाड़ में गुम हैं इन्सान दुनियां की नींद में है वासनाओं में उसकी आत्मा भटकती है ।

गला सड़ा अनार है दुनियां दूर से ही देखले।
आशना नहीं ये हैं कमीने दूर से ही देखले।

ये दुनियां गले सड़े अनार की तरहा है और इसको चाहने वाले लोग बीमार आत्मा वाले हैं जिनको तुम अपने दिली दोस्त समझते हो वो कमीने लोग हैं जो वक्त पड़ने पर तुमको अकेला रोने तड़पने के लिये छोड़ देंगे ।

कीचड़ में सने कपड़ों को जब तू धो लेवेगा।
तेरा रब तुझको अपने सीने से लगा लेवेगा।

तेरी आत्मा के वस्त्र जगत के कीचड़ से सने हैं जब तू अपनी आत्मा को धोके र्निमल बनालेगा तब वो परमेश्वर तुझे अपना मित्र बनाके अपने सीने से लगा लेगा ।

जब दुनियां की मुहब्बतें तोड़ देंगी तेरा दिल
वो परमेश्वर अपने नूर से भर देवेगा तेरा दिल।

संसार के झूठे प्यार से जब तेरा दिल भर जावेगा जब सब तेरे दिल को तोड़ देंगे तब वो प्रभ सिरजनहार तेरे दिल को अपनी पवित्र ज्योति से भरपूर करेगा उससे पहले नहीं ।

मुझे मालूम है मेरा सफ़र अकेले मुझे तय करना है रास्ते का हर एक कांटा दामन में उठाके रखना है बस एक हद है के जहां तक दुनियां और दोस्त आदमी के साथ जाते हैं उसके आगे तो अकेले ही जाना है

क्या बताऊँ हमनशीं दिल तुझे कितना प्यार करे
चाँद ना जाने क्यों तेरा इन्तज़ार करे।

क्या बताऊं तेरे लिये मेरे दिल में कितनी मुहब्बत है ? चांद मेरे साथ तेरा इन्तजार करता है।

फुलसन्दे वाले बाबा सुनो
इन्सान उसका खिलौना है ,क्या है दुनियां
कभी काँटो का कभी फूलों का बिछौना है।

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले कहते हैं आदमी उस परमेश्वर का खिलौना है जिससे वो जब तक चाहता है खेलता है जब चाहता है उसे तोड़ फोड़के फेंक देता है, ये संसार कीाी फूलों की तरह सुखदाई तो कभी काँटों के बिस्तर की तरहा बेचैनी की जगहा दिखाई देता है ।

सूरहा बन्दा ए बेसूरत अन्द।
पेशऊरू अन्द वो गर नफ़ी उफ़तनन्द।

तमाम सूरतें उस बेसूरत परमात्मा से पैदा हुई हैं और उसकी गुलाम हैं पर हैरत ये है कि वे ही उसका इन्कार कर देती हैं कि कहाँ है वो परमात्मा ? किसने देखा है उसे ? ये है और वो है ये धोका है और फ़रेब है ? ये इन्सान ऐसा है जैसा के कोई बहता हुआ दरया होता है उस दरया में चाँद की छाया पड़ रही है परमात्मा की छाया इस इन्सान के भीतर चमकती है जब वो अपनेमन को ठहरा लेता है तो वो छाया ज्यादा चमकती है और चंचलता में खो जाती है ।

दरया के पानी में जैसे चाँद चमकता है
ऐसे ही मेरे दिल में तू दिन रात चमकता है।

चश्म दरास्ता गां न रह बजोई। नुतक तस्वीस नज़र बाशद मगोई।
सितारों पर आँख जमादे रास्ता तलाश कर,ना देख इधर उधर,मत बोल, क्योंकि बोलेगा तो तू उसे सही से देख नहीं पावेगा और ज्यादा परेशान होवेगा, अ हैरान ! तूने क्या नहीं सुना कि बातचीत कुछ ही लोगों में हो तो भी ये दर्दे सर ही है ।

उसका अक्स

हर चे दर वे मी नुमायद अक्से ओस्त।
हमचूं अक्से कां माह कांअन्दर आबे जोस्त
हर एक में जो नज़र आता है वो उसका अक्स है जैसे नर के पानी में चाँद का अक्स । तू ही सखावत और रहम देता है रोटी जमीन तेरी मिल्कियत है तू रोटी देता है सखी यानी दान करने वाला रोटी उठाके दूसरे को देदेता है ।
दरये दुनियां फ़तादन ई करूं।
अक्से खुदरा दीद हर यक चहदरूं॥
दुनियांवाले नफस के कुए में गिरे हैं और अपने ही अक्स कुए में देखते हैं अहमक शेर की तरहा जिसे खगोश ने चकमा देके कुए में गिरा दिया ।
चूं के कबह ख्वेश दीदी अ हसन।
अन्दर आइना बर आइना मज़न॥
अ भले ! जब तूने अपनी कमी देखी तो फिर आइने को आइने में न मार ।
मी ज़नद बर आब इसतारहा सनी।
ख़ाक तू बर अक्शे अख़तर मेज़नी॥
रोशन सितारा पानी पर पड़ रहा है तू सितारे के अक्स पर डाला मार रहा है सितारा तो आसमान पे है ।
दाद दादे हक शनाश वो बक्शिशस।
अक्से आं दादस्त अन्दर पंचो शश॥
बक्शीश को रब की तरफ से समझ उसी का अक्स पांच इन्द्री छ चक्र में है अक्स को ना देख असल पर नज़र रख कमीनो की फिक्र ना कर उसकी नेमत जिस पर हुई हमेशा रहने वाले बन गयेवो मुर्दे को ज़िन्दा करने वाला है उसके नामलेवा छकोण वाले दरपण हैं जिनमें वो चमकता है।
दादे हक बा तू दर आमेज़ जद चूं जां।
आं चना के आं तू बाशी वो तबां।
रब की अतायतें तुझसे जान की तरहा घुलमिल जाती हैं इस तरहा के वो तू और तू वो हो जाता है ।
गर नामद इश्तहाई नानो आब।
बद हिदत बे ई जौ़ कुब्बते मुश्ताब॥
अगर रोटी पानी की जरूरत ना रहे तो वो तुझे पाकीजा़ गिजा़ देता है यानी तेरी रूह को अपने नूर से नूरमनूर कर देता है ।
जू हयाते इश्क ख़्वाहा वो जान मख़्वाह।
तवा जूवा रिज़्क ख्वाह वो नान मख़्वाह॥
उसके इश्क की ज़िन्दगी को चाह जान ना चाह तू उससे वो रिज़्क चाह जो रूह की रोशनी है तू खालिस रोटी ना चाह ।
कर निहां बगज़ गश्त वां करने नोशियत।
महा आं अस्त आबे आं आबे नेस्तयत॥
ज़माने गुज़र गये और ये नया ज़माना है चाँद तो वही है पर पानी वो पानी नहीं पहला पानी तो बह गया ये नया है, आँख का पानी मर गया रब तो वो ही है पर लोग बदल गये वे पहले से ना रहे ।

गर दो हरफ़े सिदक गोई अ फलां । गुफते तीरा दर तबा गरदूं खां ।
अ दोस्त ! अगर तू सच्चाई के दो बोल बोलेगा तो तेरा मुकद्दर तेरे पीछे पीछे तुझसे बात करता हुआ चलेगा

अ साकी

ओ दुनियां को चलाने वाले ओ मेरे आसमानी प्रीतम ! आगाह अ साकी प्याले का दौर चला और वो छलकता प्याला मुझे भी दे,मैं फूला फिरा क्योंकि इब्तदाए इश्क आसान नज़र आया पर मुश्किलें आन पड़ीं इस हीरन जैसी नाभी की महक की कसम जो हवा उसकी तहें से खोलेगी तो जाने कितने लोग उस रहस्य में उतर जावेंगे आसमानी महबूब जब अपनी जुल्फें खोलेगा तो उसके चाहने वाले पागल होकर गिर पड़ेंगे अपने कलेजे पीटेंगे हाय हाय करेंगे ।

बमे सज्जादा रंगी कुन गिरत पीरे मुगां गोयद । के सालिक बेखबर नबूद ज़राहे वो रस्मो मंज़िलाह
अगर तुझे पीरेमुगां कहे तो मुसल्ला शराब से रंगले इस लिये के सालिक मंजलों की रस्मो राह से बेख़बर नहीं होता ।

मरादर मंज़िले जाना च अमन वो ऐश चूं हर दम ।
जरस फरियाद मी दारद के बर बन्ददीद मुहोमला ।
मुझे महबूब के पड़ाव में क्या अमन वो ऐश जबके हरदम घण्टा ऐलान कर रहा है के चलने की तैयारी करलो ।

शबे तारीक वो बीमे मौज वो गरदाबे चुनी मायल ।
कजादा नन्द हाले मा बक्साराने सालहा ।
अंधेरी रात और मौजों का खौफ़ और ऐसा खौफ़नाक भवंर साहिलों के बेफिकरे हमारा हाल कब समझ सकते हैं ?

हुमाकारम ज़खुद कामी बे बदनामी कशीद आखिर निहां के मांदां राजे कजो साजिन्द महफिलाह । खुदगर्जी की वजहा से मेरे तमाम काम बदनामी के अन्जाम पर पहुँचे वो राज़ कब छुप सकता है जिससे महफिलें गरम हों अ हाफ़िज़ हजूरी चाहता है तो इससे गायब ना हो जब तेरी महबूब से मुलाकात हो तो दुनियां को छोड़ और इसे तर्क करदे त्याग दे ।

अ फरोगे माहे हुस्न अजरूए रूख़साने शमा
आबरूए खूबी अज़ चाहे ज़ख़न्दाने शमा ।
अ वो के हुस्न के चाँद की रौनक तुम्हारे रूए रौशन से है खूबसूरती की आबरू तुम्हारी ठोडी के गड्ढे से है ।

अजमे दीदारे तू दारद जाने बरलब आमदा
बाज़ गरदद या बर आयद चीश्त फरमाने शमा ।
होठों पर आई हुई जान तुम्हारे दीदार का इरादा रखती है तुम्हारा क्या हुकम है वो निकल आवे या लौट जावे ?

के दहद दस्त ई गरज़ या रब के हमदस्ता सूंद ।
खतरे मजमूए माज़ुल्फ़े परेशाने शमा
अ खुदा ये मकसद कब हासिल होगा कि इकट्ठे हो जायें हमारा मुत्मईन दिल और तुम्हारी परेशान जुल्फ़ ।

कस बदौरे नरगिस्त तरफ़े निस्बत अज़आफ़ियत
ब के बफरू सनद मस्तूरी बमिस्ताने शमा ।
तुम्हारे नरगिस के दौर में किसी को चैन नसीब ना हुआ बेहतर ये ही है के पारसाई तुम्हारे मस्तों के हाथ बेच दें ।

नेस्त दर जब्त तत चूं बुक्शादी दहां। अज़ पे साफ़ी सूद तेहरा खहां।
जब तूने मुंह खोल दिया तो अगली बात तेरे काबू में नहीं है और तू बुराई और मुकद्दर तक जा पहुँचता है, ये ही वो मंजिल है जहां से आदमी की परेशानी और नीचा देखना शुरू होता है, इस लिये बालने से पहले ही ठहरजा ।

हमारा नसीबा जगादे

वक्ते ख्वाब आलूदे माबीद दार ख्वाहिद शद मगर। जां के जदबर दीदा आबे रूए रूखसाने शमा।
शायद हमारा सोया हुआ नसीबा जाग उठे इसलिये के तुम्हारे रूएरोशन ने आँखों पर पानी छिड़क दिया है ।
बासबा हमराहा बफरसत अज़ रूख़्त गुलदस्ता बू के बोये बसनूयम अज़ खाके बुस्ताने शमा।
अपने रूख का एक गुलदस्ता हवा के साथ भेज दो शायद तुम्हारे बाग के खाक की हम खुशबू सूंघ सकें ।
दिल खराबी मी कुनद दिलदार रा आहगा कनियां रिहार अ दोस्तां जानेमन वो जाने शमा।
दिल खराबी पैदा कर रहा है महबूब को आगाह करदो हां अ दोस्तो तुम्हें अपनी और मेरी जान की कसम ।
उम्रता बादा दराज़े साकियाने बज्मेजम गरचे जामे मा नसद परमे बदौराने शमा।
जमशेद के महफिल के साकियो तुम्हारी उम्र दराज़ हो अगचे तुम्हारे दौर में हमारा प्याला शराब से पुर नहीं हुआ है ।
अ सबा बा साकाने शहर यज़्द अज़्माबगो काये सरहक नाशनाशां गोय मैदाने शमा।
अ हवा ! परमेश्वर ककी पहचान रखने वालों का सर तुम्हारे मैदान की गेंद है ।**गरचे दौरम अज़्बसाते कुर्ब हिम्मत दौरे नेस्त बन्दएशाहे शमायम वो सना ख्वाने शमा ।**
अगरचे तुम्हारी निकटता की बसात से हम दूर हैं पर हमारा खयाल हमारी तवज्जह दूर नहीं है अ परमेश्वर के निकट खड़ें हुओ ! हम भी परमेश्वर के गुलाम और तुम्हारी मदद चाहने वालो में से हैं
दौरदार अज़ ख़ाकोखूंदामन चूं बरमा ब गुज़री कानदरीं रह कस्तां बसयार निद कुर्बाने शमा।
जब हमपर से गुज़रो तो दामन को खाक और खून से दूर रखो क्योंके इस रास्ते में तुम पर कुर्बान मक्तूल बहुत हैं ,अ बुलन्द सितारे खुदा के लिये तवज्जह कर ताकि आसमान की तरहा तुम्हारे महल की खाक को मैं जमीन पे खड़ा होके चूम सकूं ।
अदल आं अदल सत फ़ज़्ल आं फ़ज़्लहम
लीक मुस्तबदल शुद आं करनदा उमम।
कुदरत का निज़ाम तो वही है पर लोग पहले जैसे सच्चे दिल वाले ना रहे ।
खूबरूइयां आइना खूबी उ।
इश्क एसां अक्से मतलूबी उ ।हसीन उसके हुस्न का आइना हैं जो प्रभ से प्यार करते हैं जाहिर है कि ये उस प्रभ की ही तरफ से नेमत है हसीनो का हुस्न अपनी असिल की तरफ वापस लौट जाता है अक्स पानी में कब रहता है सब सूरतें पानी में अक्स की तरहा हैं जब तू अपनी आँख मलेगा तो बस हकीकत में वही है वही परमात्मा उसके सिवा कुछ कायम नहीं,उसके सिवा सब नक्श हैं।

चूं खुदा फरमूदर है राहेमन। ईं ख़फ़ीर अज़ चिश्त वां यक राहे ज़न।
सबके परमात्मा ने फ़रमाया ये रास्ता मेरा रास्ता है साफ़ और सच्चा, फिर अ जहान के मालिक ! ये रहबर और राहज़न यानी रास्ता बताने वाले और राहगीरों को लूटने वाले क्यों हैं ? एक ही पेट से जाहिल और रोशन अक्ल वाले यानी पवित्रआत्मा वाले क्यों हुए ?

सूरज का साथी

हम रह ख़ुरशीद रा सपर मख़्वा।
आं उ मसजूद शुद साजिद मदा।
सूरज का जो साथी हो गया उसे तू चिमगादड़ मत कह जो परमात्मा में फ़ना हो गया वो उसी की ज़ात में एक हो गया उसे तू सजदा करने वाला ना कह,जब दो थे तो सजदा भी था और इबादत भी और जब दो ना रहे उसके नूर से वो जब नूर हो गया एक हो गया तो एक तो बस वो ही है अब तुझे समझ ना आवे तो मैं क्या करूं ? तौहीद के किबले दो कैसे हो सकते हैं अद्वैत में दो कहां से आये ?
अक्सहा रा मान्द वाये अक्स नेस्त।
दर मिसाले अक्स हक नबूदो नेस्त।
जो अक्स हैं वे नूर को देखते हैं और जो खुद नूर है वो किसे देखे वो तो उस एक में एक है वो अक्स नहीं तजल्ली हैं वे अवाम में नहीं गिने जाते । जिस रोशनदान पर धूप पड़ रही है उसे देखना सूरज को देखने जैसा है पर उस धूप और सूरज के बीच एक रास्ता है फल जो टोकरी में रखा है उस फल और पेड़ के बीच एक रास्ता है उसे समझने के लिये एक वक्त चाहिये । वो परमेश्वर अगर तुमको बहुत ज्यादा चाहता है तो वो हस्ती को खतम भी कर देता है वो सबको पानी बनाकर पी जाता है उसके रहस्य को जानने वाले बस खामोश हो गये।
तालिबो अस्त गालिबो अस्त आं किर्दगार।
ताज़ हस्ती हा बर आरद ऊ दमार ॥वो ख़ुदा तालिब और ग़ालिब है वो हस्तियों को हलाक कर ड़ालता है।
दू मगोये व दू मख्वां व दू मदां।
बन्दा रा दर ख्वाज़ा ए ख़ुद महूदां ॥दुई का कायल ना हो,दुई ना पढ़,दुई ना समझ गुलाम को अपने आका में मिटा हुआ समझ।
चूं जुदा बीनी ज़हक ईं ख़्वाज़ा रा।
गुम कुनी हम मतन वहम दि बा जारा ॥अगर तू गुरु को रब से जुदा समझेगा तो तू असिल और यकताई की मंजिल को गुरु कर देगा।
चश्मे दिल राहें गुज़ारहा कुन ज़तीं।
ई यके किबला अस्त दो किबला मबीं ॥
ख़बरदार दिल की आँख को मट्टी से आगे बढ़,ये एक किबला है दो किबले ना देख।
चूं दबीदीं मान्दी अज़ हर दो तरफ।
आतिशे दर ख़फ फ़ता दो रफ़्त ख़फ ॥
जब तूने दो देखे दोनो तरफ से गया,सोख़्ते में आग लगी ओर सोख़्ता जल गया।
शुकर मी कुन मर्देख़ुदारा दर ने ऐम।
नेज़ मी कुन शुक्रो ज़िक्र ख़्वाजाअम ॥
नेमतों के बारे में खुदा का शुक्र अदा करता रह,गुरु का शुकर और ज़िकर भी कर।

कमतरीने लुबाते ऊ जाने तुस्त। ईं चगोना चूं ने जां के शुद दुरस्त।
तेरी जान उस रब का छोटा सा खिलौना है,जान के लिये चूं चपड़ ना कर जिस्म अकल का साया है ।

परमेश्वर कहेगा मैं तेरा मेहमान था

रहमते मादर अगरचे ख़ुदास्त।
ख़िदमते उहंग फ़रेजी अस्त वो सद सदास्त॥
मां की मुहब्बत भी हालांकि ख़ुदा की तरफ से है पर उसकी ख़िदमत कर।
दर क़यामत बंदा रा गोयद ख़ुदा।
हैं चे करदी आं चा दादम मरतरा॥
कयामत में खुदा बंदे को कहेगा हां तू तूने क्या किया जो मैने तुझे दिया था।
गोयद अ रब्बे शुकरे तू करदम बजां।
तू ज़ तू बूद असिल आं रोज़िये वो नान॥
वो कहेगा अ ख़ुदा मैने दिलोजान से तेरा शुक्र अदा किया क्योंकि रोटी और रोज़ी तेरी तरफ से थी।
बर करिमे करदा ज़ुल्मो सितम।
नज़दस्ते औल ओ रसीदत नेमतम॥
तूने सखी पर ज़ुल्म किया क्या उसके हाथ से मेरी नेमतें तुझ तक नहीं पहुँची ?
अ फ़लक सिज्दा कुमा कुए तुरा।
अ वो के तेरे कूचे को आसमान सजदा करता है। मूसा की भेड़ खो गई सुभी मिली वे दुखी हुए उसकी धूल झाड़ी गुस्सा ना किया उसकी र्दुगति देख रोये ऐसा दिल देखके रब ने उन्हें लोगो का चरवाहा बना दिया के ये मेरी मखलूक पे रहम करेगा ।
चूं हमी गंजद जहाने ज़ेरेतीं।
चूं बंग जद आसमाने दर ज़मी॥
मिट्टी के नीचे एक आलम कैसे समाता है, एक आसमान ज़मीन के नीचे कैसे समाता है जिस्म साया है इसका नूर जिन्दगी और मौत मैं भी इस दुनियां के बाहर है ग़ैब की फ़िजा में एक परन्द उड़ रहा है उसका साया ज़मीन पर बिछा है जिस्म रब के साये का साया है और उसकी निगाह में है ।

एक बार प्रभु सतपुरूष के यहां रात गये एक मेहमान आया वह आदमी मक्कार और झूठ बोलने वाला और पेटू था कोई उसे अपने मकान पर ठहराता नहीं था एक ने तो उसे अपने मकान से उठाके नीम के पेड़ के तले बैठा दिया सर्दियों की रात में कोई उस जाहिल आदमी का हाथ पकड़के आपके मकान के सामने पहुँचाके खुद अंधेरे मे कहीं गुम हो गया आपने बढ़कर उसको बैठाया घरवालों के गुस्से की वजहा से पड़ौस में से उसके लिये खाना मंगाया उस मेहमान ने खूब खाया और सो गया सुभा जल्द ही वो चला गया पर सारा मकान धुवें और बदबू से भरा था देखा उसने लिहाफ बीड़ी पीके फूंक दिया था और कपड़े गन्दगी में सने थे सतपुरूष ने जल्दी से कपड़े और मकान को धोया घर के लोग जान गये कि बात क्या है और उनको कुछ का कुछ कहने लगे पर वो शान्त मन से अपना काम करते रहे और सोचते रहे परमेश्वर कहेगा मैं तुम्हारे पास आया और तुमने मुझे दुत्कार दिया ना बैठाया ।अ मेरे परमेश्वर ! कम से कम मैं इस शरमिन्दगी से तो तेरे सामने बच ही जाऊंगा ।

अक्ल गोयद जसद रा काये जमाद। बू ए बुर्दी हेच अज़ां बहरे मुआद।

अक्ल जिस्म से कहती है अ बेरूह ! क्या तूने उस मालिकेकुल का कुछ अता पता पाया ? जिस्म कहता है मैं तेरा साया हूँ साये से कौन पूछता है ?

कुदरत का मोती

जब कभी मैने अपने सर को
गुरू के कदमो पे रख दिया
उस कुदरत ने अपना मोती
सीने में मेरे रख दिया ।

जब हवाओं ने तिनका उड़ाके
सातवें आसमान पे रख दिया
चाँद ने अपने चेहरे को मेरे
चेहरे के ऊपर रख दिया ।

मैने बक्से में दिल के छुपाके
रखा उसकी मुहब्बत का मोती
कैसे हो गयी ख़बर दुनियां को
मैं तो रह गई महल में सोती ।

क्या कहेगा कोई ये ना सोचो
क्या कहेगा वो रब ये सोचो
दुख कितने मिले ये ना सोचो
सुख कितने दिये प्रभ ने सोचो ।

ये संसार संतों का साथी
ना हुआ है कभी और ना होगा
चमगादड़ सूरज का साथी
ना हुआ है कभी और ना होगा ।

तू अपने दुखो की शिकायत
मत कर किसी के सामने
तूने देखा है नूर का दरया
तो रूकजा उसी के सामने ।

ये जिसम है झाग के जैसा
आत्मा सागर का है पानी
झाग का मत पुजारी बन तू
तू आप ही है नूरानी ।

जो चाहे तू रब से माँग ले
वो इन्कार कब करता है
चुप रहता है वो इस वास्ते
तुझे ज्यादा वो प्यार करता है ।

एक अमीर के यहां दो मांगने वाली औरतें गईं उनमें एक बदसूरत बुढ़िया और दूसरी जवान हसीन,अमीर ने बूढ़ी को बासी कल का रखा खाना देके टाल दिया और दूसरी से बातें करने लगा कि बैठ ताजा खाना बन रहा है जब खाना देदिया बोला बैठ अभी हलवा बन रहा है वो नज़र से उसका शिकार कर रहा है बदसूरत बुढ़िया ये दुनियां है जिसे वो तुरन्त उल्टा सीधा देके टाल देता है और हसीन उसका नाम लेने वाले हैं जिन्हें वो अपने सामने अपनी मुहब्बत की वजहा से देर तक बैठाये रखता है उनको अपनी मुहबबत के जाम पिलाता है।

वक्त मुश्किल का जब आता है
शैतान भटकाता है
पानी के एक प्याले के बदले
ईमान का मोती बिकवाता है ।

अ मेरे हमनशीं मेरे दिल का
है तेरी तरफ को रास्ता
मैने दुनियां के रस्ते छोड़े
पकड़ा है फ़कत तेरा रास्ता ।

तन परस्तों के वास्ते दुनियां
क्या है एक जन्नत है
रब के चाहने वालों को
उसका इश्क ही सब कुछ है ।

मैं फुलसन्दे की गलियों में
चिराग़ जलाता फिरता
चाँद निकला है नील गगन में
मैं सबको बताता फिरता ।

पैगम्बर जो तमाम दुनियां के लिये उस परमेश्वर से प्रार्थना और दुवा करते हैं वे चाहते हैं कि गरीब मिस्कीनों की दुवायें उनको हासिल होवें, बाज तीतर के आगे पर बिछा देता है, सूरज ज़र्रे की दिलजोई करता है, अगर तू बड़प्पन चाहता है तो अपने से छोटे के आगे झुकजा।

दुवा

अ दिल तू अपनी बात अपने रब को बतादे
के फुलसन्दे के मक्खी मच्छरों को भी तू फ़रिश्ता बनादे। 1
माना के अंधों का हज्जूम मेरे साथ है
पर कभी सूरज को इनसे भी मिलवादे । 2
ना कोई ज़मीर है ना ईमान है कोई
इन पत्थरों में भी तू चिराग़ जलादे । 3
वक्त ने जिनके कतर दिये हैं पर
फूंक से अपनी उन्हें फिर आसमान में उड़ादे । 4
पत्थरों को मुर्दों को तू महबूब मेरे
मारके अपनी ठोकर फिर से जिलादे । 5
अ दिल कहां कहां तू ढूंडेगा उस रब को
चल गुरू के कदमो पे जाके सर को झुकादे । 6
तू कण्डील है शीशे का वो चिराग़ है तेरा
कर करके साफ अपना एक एक शीशा चमकादे । 7
पलकों पे ओस है या चमकते हैं सितारे
एक एक मोती यार के कदमों पे तू लुटादे । 8
जन्नत के बाग़ हूर परी नहीं मांगता तुझसे
बस ज़मी पे अपने चाहने वालों से मिलादे । 9
या तो तू पिलादे एक प्याला अपने हाथ से
या ना हो तो साकी के हाथों से ही दिलादे । 10
जो अपने हाथ से धोते हैं मेरे कपड़े
उनके दिलों को धोके आइना बनादे । 11
मेरे नहाने को रात में जो भरते हैं पानी
देवताओं को उनका पानी भरने वाला बनादे । 12
जो गाते मेरे साथ परमेश्वर तेरे गीतों को
उन्हें बाग़ेजन्नत की तू बुलबुल बनादे । 13
जो मुझपे गुस्सा करते नाराज़ मुझसे रहते
अ रब उनपे तू अपने प्यार के दरया को बहादे । 14
जो खाना बनाते मेरे घर और दुनियां को खिलाते
प्रभ अपने हाथ से तू कभी उनको खिलादे । 15
जो निर्जल उपवास रहते सच बोलते हर इतवार आते
उनके दिलो में स्वर्ग की सुगन्ध को तू बसादे । 16
जो लड़ते झगड़ते रहते और मुझको बुरा बताते
उनके दिलो में मुहब्बत के तू फूल खिलादे । 17
माथे पे जिन्होने तेरा नाम लिखवा लिया है
सोने चाँदी के ताज़ तू उनको पहनादे । 18
जो झाडू लगाते हैं आंगन में मेरे आके
स्वर्ग में उनके सोने के चबूतरे बनवादे । 19
जो धोबी नाई रहते मेरे गाँव में अ रब
सौ पीढ़ी उनकी खावें उनको इतना दिलवादे । 20
जो कागज मट्टी के बरतन लाते तेरे भगतों के वास्ते
उनके बरतन भांडे तू सोने के बनादे । 21
जो अपने घर कराते सतसंग तेरा हे प्रभ
दुख दर्द रंज गम सब उनके तू मिटादे । 22
जो झूठ दगाबाज़ी में ले गये हैं नम्बर
उनके दिलो में ईमान की तू शम्मा को जलादे । 23
जो मेरे दिल को तोड़ते मेरे अपना बनके
कोई उनका दिल ना तोड़े ऐसा तू कुछ करादे । 24
जिन्होने टुकड़े टुकड़े कर दिया है तेरा पंथ
सिल सिल के उनको तू रब तिरपाल जैसा बनादे । 25
सुनते नहीं जो गुरू की ना अपने बजुर्गों की
तू उनके कान पकड़के अपनी आवाज़ सुनादे । 26
झूठ बोलते बोलते थक गये हैं जिनके मुंह
सच के पेड़ तले उन्हें आराम कभी करादे । 27
जिनको यकीन है के तूने मुझे आसमान पर बुलाया
उनके लिये तू अपनी रहमत के दरवाजों को खुलवादे । 28
जो मेरी हर बात पे रखते यकीन पक्का
उनके दिलों को तू सच्चे मोती जैसा बनादे । 29
जो मेरे साथ तेरे रस्ते पे चल रहे हैं
हर काँटा हर पत्थर उनके रस्ते से हटादे । 30
तेरे नाम का परकास जो करते हैं गांव गांव
उनके सीने में तू अपनी रोशनी बरसादे । 31
गुरू के भीतर जो देखते हैं तुझे या तेरा नूर
मेरे रब कभी तू उनको अपना दीदार करादे । 32
पैदल जो तेरे नाम पे आते हैं अपने घर से
उनके पैरों तले तू फूलों को बिछादे । 33
फुलसन्दे वाले बाबा करते हैं ये दुवायें
फुलसन्दे में रहने वालों को प्रभ तू सोने का बनादे । 34

लातादाद ख़ज़ाना वो शाह वीरानों में रख देता है, अपनी मुहब्बत टूटे हुए दिलों में रख देता है, आसमान से जो तकलीफ और मुसीबत तुझपर आवे तो खुशनसीबी का इन्तज़ार कर कि वो रब तुझपे अपनी नेमतें उतारने वाला है, अगर वो तुझसे मच्छर के बराबर कुछ छीनता है तो बेशुमार दौलतें भी तुझे बक्श देता है।

रुह

जिस्म साये साया दिलस्त।
जिस्मके अन्दर ख़ुरे पाए दलस्त॥

जिस्म को साया करार दिया कल्ब रुह है, रुह की दो किस्में हैं एक रुह सराजी जो रुहे आज़म है और वो तमाम अरवाह का मुम्बा यानी ख़जाना है,दूसरी रुह जुजाज़ी है जो हर शख्स में जुदा है और उसका ताल्लुक हर शख्स से रुहे हैवानी के जरिये है तू जिस्म रुहे हैवानी से इस्तफ़ादा यानी ताल्लुक रखता है और वो रुह रुहे जुजाबी के ताबे है और रुह जुजाबी रुहे सिराज़ी के ताबे है तो जिस्म इस तरहा रुहे सराजी के साये का साया हुआ लिहाजा जिस्म को वो रुतबा कहाँ मिल सकता है जो रुह को कायम है।

मर्द ख़ुफ़ता रुहे ऊ चूं आफ़ताब।
दर फ़लक ताबान तन दर जामाह ख़्वाब॥

इन्सान सोया हुआ है उसकी रुह सूरज की तरहा है आसमान में चमकती हुई और जिस्म बिस्तर में है। रुह चूंके मेरे रब के अमर में से है पोशीदा है में मिसाल भी कहूँ तो जुदागाना है।

चन्द हमचू फ़ाख़ताए काशाना जू।
कू कू कू कू कू॥

घोंसला ढूँडने वाली फ़ाख़्ता की तरहा अ रुह तू कब तक कू कू करेगी।

कूहा हुमा निज़ा के सिफ़ाते रहमते अस्त
कुदरतस्त वो नुजुज हतसतस्त वो फ़तनतस्त।

कहाँ है वो जहाँ उसकी रहमत है,कहाँ है वो जहाँ रहमत ही रहमत है कुदरत है पाकीज़गी है और समझ है वो वहाँ है।

कुहा नजा के उम्मीदे मर्द ज़न।
मीरादे दर वक्ते अन्दोह हज़न॥

वो कहाँ के जहाँ इन्सानों की उम्मीद रंज ग़म के वक्त जहाँ जाती है यानी परमात्मा की तरफ।

कुहा निजा के वक्ते इल्लते।
चश्मे पर्द बर उम्मीदे सेहते॥

कहाँ है वो कि बीमारी के वक्त सेहत की उम्मीद पर आखँ उठती है।

आ तरफ के बहरे दिफ़ा जशीतये।
बाद जूई बहरे किश्त वो कशिस्तये॥

वो वहाँ है कि बुराई को दफन के लिये खेती और कश्ती के लिये तू हवा की तलाश करता है। मुश्किलों में जहाँ दिल दौड़ता है। वहाँ के जब दिले इशारा करता है कि जब दिल उस रब की तरफ इशारा करता है।
ये रुह बगैर हायहल्ले के रब के साथ है और उसकी मौत नहीं है क्यों कि वो लामकां पे है कजा़ नहीं वो नाकज़ा है।

अक्ले माको ता ब बिन्द गर्बो शर्क।
रुहा रामी ज़िन्दा सद गूना बर्क॥

चुंगी ए रा कू नवा ज़द बस्तोचार। चूं नयाबद गोश गर दद चंगोवार।
सारंगी बजाने वाला जो 20 राग बजाता है जब सुनने वाला कान नहीं पाता तो सारंगी की ही तरहा ख़ामोश हो जाता है,ऐसे ही पूरण गुरू जब किसी योग्य शिष्य को नहीं पाता तो अपने नूर के मोतियों को समेट कर आसमान पर ले जाता है,क्योंकि कहा है कि मोतियों को कुत्तो के आगे ना डाल।

उदय अस्त

हमारी अक्ल कहाँ है कि हम उदय अस्त को देखें सैकड़ो किस्म की रोशनियां रुहों पर रही है। झाग में रहते हुए उसके लिये घटाव बढ़वा था घटाव खत्म हो गया बढ़ाव बाकी रह गया। रुह जिस्म के झाग में थी उसमे कुबें इलाही के एतबार से घटाव बढ़ाव था जब वफ़ात हो जाती है घटाव खतम हो जाता है बढाव ही रह जाता है।

जज़रो मदश बुद बा बहरे दर ज़बद।
मुनहती शुद जज़रो बाकी मनिद मद॥
कपड़ा दर्जी के हाथ में है वो उसे काटे या सिले तू मेरी रुह को काट या सिल।,

चशमदारी तू बचश्मे ख़ुद नगर।
मंगरा अज़ चश्मे सफ़िहे बेख़बर॥
तू आखँ रखता है अपनी आखँ सक देखले,बेवकूफ! बेखबर की आँख से ना देख।

गोशदारी तू बगोशे ख़ुद शुनू।
गोश गोला रा चरा बाशी गुनू॥
तू कान रखता है अपने कान से सुन,तू अहमकों के कान का क्यों पाबन्द होता है।

बेज़ तकलीदे नज़र रा पेशा कुन।
हम बराए अक्ले ख़ुद अन्देशा कुन॥
बगैद गवाही के आँख से देख नकल ना कर अपनी अक्ल से सोच झाग का पुजारी ना बन समन्दर के भीतर जा।

कारोबारे अम्बियां वो मुरसिलों।
हस्त अज़ अफ़लाको अख़्तर हां बुरो॥
अम्बिया और रसूलों के कारोबार आसमानो और सितारो से बाहर है।

तू बरुंर बहम जा अफ़जाको दवार।
वा निगाह नज़ारा कुन आं कारोबार॥
तू भी आसमानो और सितारों में घूमने वालों में से बाहर निकल तब उस कारोबार का नज़ारा कर । तू चूजो की तरहा अण्डे में है तू हवा के परिन्दो की तस्बी नहीं सुनता जो खुली हवा में अपने परवरदिगार की स्तुति करते हैं।

चूंके हंगामे फ़िराके जा शूद।
देव दल्लाले दुरे ईमाने शूद।
मौत के वक्त और मसीबत के वक्त शैतान ईमान के मोती का दलाल बन जाता है और एक कटोरे पानी के बदले में बेवकूफ़ आदमी का ईमान बिकवा देता है क्योकि उस वक्त आदमी बेचैन होके कुछ भी करने को तैयार हो जाता है ।

मी फ़रोशी हर ज़मा दुर्र ज़कां।
मी शितानी हम चूं तिफले गिर्दगां।
तू हर वक्त खान में से एक मोती बेच कर बदले में अखरोट लेलेता है सच्चाई बेचकर मामूली फ़ायदा उठा लेता है अ बेवकूफ़ आदमी ऐसा ना कर ।

आ मारा अज़ इश्के हमख़्वाबा वो तबक। के बूद परवाऐ इश्के सुना ए हक।
अवाम को यानी दुनियां के लोगों को सिवा हमबिस्तरी और दस्तरख़्वान यानी वासना की आग और पेट की आग के इश्क के आगे उस रब्बे दो जहां के इश्क की परवाह कब होती है ?

अ अमानतदार !

जूजे बू शेदस्त दुनियां अ अमीं।
इम्तहानश कम कुन अज़ दूरशबबीं।
अ अमानतदार ! ये दुनियां गला सड़ा अखरोट है उसे ना आजमा उसे दूर से ही देखले हसीन चाँद सी सूरत शुरू में चौदवीं के चाँद जैसे मगर अन्जाम में जहन्नम का ग़ार हैं ऐसी खाई के जिसमें गिर कर आदमी बचता नहीं ।
दस्त कुन बज़्ले अल्ला ज़्न।
जुज़बरा अमरो नही यज़दानी मतन।
आँध मीच कर अपने रब की रस्सी पर हाथ डाल उसे मजबूती से पकड़ खुदाई अमर यानी दौलत के सिवा दूसरा इरादा ना कर
चुस्त हबल अल्ला राह करदन हवा।
कीं हवा शुद शर शर रे मर आदरा।
उस कुदरत की रस्सी क्या है ख्वाहिशे नफसानी को छोड़ना और सच की राह पकड़ना औरा जानले कि नफ़स आग के लिये तेज हवा और आँधी है ।
ख़ल्के दर ज़िन्दान नशिश्तां अज़ हवास्त।
मुर्गे़रा पर हाब बशता अज़ हवास्त।
मख़लूक ख़्वाहिशे नफ़सानी की वजहा से कैदख़ाने में बैठी है परिन्दे के पर नफ़स की वजहा से बंधे हैं, मछली तवे पर नफस की वजहा से है रूह के लिये नफ़स शिकन्जे हैं अ समझदार नफ़स से बेख़ौफ़ ना हो ।

चूं रिहा करदी हवा अज़ बीमे हक।
दर रसद सूहराक़ अज़ नसनीमे हक।
जब तूने अपने रब के डर से ख्वाहिशे नफ़सानी को छोड़ दिया और पवित्रता को जीवन में कायम कर लिया तो उस रब की तरफ से तेरे पास प्याला पहुँचेगा यकीन रखअपने नफ़स के पीछे ना चल वासनाओं के पीछे ना चल रास्ता माँग अपने परमात्मा से, स्वर्ग का वो सोत जो बहुत ऊपर से बहता है उस तरफ को चल घास की तरहा ख्वाहिशे नफसानी का तलबगार ना बन बेशक आसमान का साया झोंपड़ी से बेहतर है खुला आसमान अच्छा के तू झोंपड़ी में घुसे और वो यकायक तेरे सर पे आ गिरे ।
गह चूंकाबू से नुमायद माह आरा।
गह नुमायद रोज़ा कैरे चहारा।
वो चाँद कभी बीमार की तरहा दीखता है और कभी कुवे की तरहा चमन दीखता है यानी ऐसा लगता है के जैसे परमातम का रास्ता बड़े काँटों से भरा है अंधेरे से पुर है पर ये शैतान का जादू है के रूहें अपने रब की तरफ ना जावें और दुनियां में ही भ्झटकती और मारी मारी फिरें अ हमारे रब तू हमारी आँख से जादू हटादे अच्छे को अच्छा और बेरे को बुरा दिखादे ताकि शैतान हमपे जादू ना किये रहे ।

रू सगे कैहफ़े खुदा बंदेश बाश।तारहा निदर्ज़ीं तग़ारत अस्त फ़ाश।
जा उस रब का कुत्ता बनजा,ताकि उसकी रहमत से तू दुनियां के टुकड़ों का मोहताज़ ना रहे और लोगों के अहसान की कैद से छूट जावे ।

परिन्दो ने मुझसे कहा

परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना
डूब जाये सूरज तो चिराग़ जला
पत्थरों में जाके तू फूल खिला ।
परिन्दो ने मुझसे कहा अ जानेमन अ जानेवफा !

एक परिन्दा फूल लेके आया मेरे पास में
बोला जन्नत के गुलशन से आया हूँ तेरे पास में,
कहने लगा फ़रिश्ते जो उस रब के पास उड़ते
वो ही ज़मी पे परिन्दे बनके संतों के पास उड़ते,
वो अगर होता नहीं तो तारे चमकते कैसे ?
सूरज दिन में चाँद रात में छिड़कते रोशनी कैसे
वो अगर होता नहीं इन्सान होता कैसे ?
ये ज़मी और आसमा होते फिर कैसे
कौन समन्दर को मोती देता इस संसार में ?
देवताओं को कौन बिठाता उस प्रभ के दरबार में
कौन फ़रिश्तों का घर बनाता तारोंसितारों के पार
कौन इस अंधयारे में करता फिर उजियार ?
परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना

अच्छे बुरे दिन सबपे आते घबराना नहीं चाहिये
दुनियां के मालिक को बस सिर झुकाना चाहिये
पैर किसी का टूट जावे पंख प्रभ देदेता है
कोई कुए में गिर जावे दरवाज़ा बना देता है ।

एक परिन्दा बोला देखो कलम क्या क्या लिखता है दूसरा बोला कलम नहीं हाथ सब कुछ लिखता है ।तीसरा बोला हाथ नहीं आदमी ही लिखता है चौथा बोला आदमी में अकल ना हो तो कौन लिखे पांचवो बोला अकल भी हो और रूह ना हो तो कौन लिखे रूह और अकल को वो प्रभ ही हरकत देता है ।
वो जब चाहे दुनियां बनावे बनाके मिटा देता है
परिन्दो ने मुझसे कहा परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

एक परिन्दा बोला आदमी किस कदर मक्कार है
कुछ ना कुछ हडपने को हर बखत तैयार है।
जैसे शिकारी कुत्ते को शिकार की तलाश है
ऐसे ही हरबखत इसकोजाने किसकी तलाश है।
जिस प्रभ ने सब कुछ दिया उस को भूला बैठा है
रेशमी कपड़े पहन के मौत के घर में बैठा है
परिन्दो ने मुझसे कहा। परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

एक परिन्दे ने एक दिन एक शिकारी को देखा
फूलों की टोपी पहनी घास का चोगा पहना था
घास में घास बनके लेटा पंछियों की तलाश में
जाल बिछाया था उसने शिकार की तलाश में
पंछी बोला तू फकीर है या कोई शैतान है
अ इन्सान तुझपे तो शैतान भी हैरान है
पहन फ़कीरी का बाना सबको धोखा देता है
बेशरम तेरा नसीब तुझको धोखा देता है
बोला परिन्दा इन्सानो के संग इबादत कर बन्दे
इकले मुसाफ़िर के सर पे रास्ता बोझ है बन्दे ।
लकड़ी के संग लोहा भी देखो तर जाता है
सच्चे गुरू संग झूठाभी एक दिन तर जाता है ।
परिन्दो ने मुझसे कहा परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

अ परिन्दों ध्यान से सुनो हमारी बात

ताबके नोशी तू अशवा ई जहां। के ना अकलत मांद बर कानू न ज़ां।

तू कब तक दुनियां की मुहब्बतों के फ़रेब खायेगा ? के ना तेरी अकल कायदे में रही ना रूह,इस आसमान ने तुझ जैसे ना जाने कितनो के दामन चाक कर डाले हैं ।

परमेश्वर के दोस्तों को ना दिन है ना रात ।
झूमते रहते होती रहती नूर की बरसात
आसमानी प्रीतम का पकड़ा उन्होने हाथ ।
प्रभ की तरफ जाने वालो पे इम्तहान आते हैं
लेकिन सच्चे लोग कभी दुख से नहीं घबराते हैं
कुत्तो का शोर सुनके काफ़ले रास्ता नहीं छोड़ते
चाँद तारे आसमा में चलना नहीं छोड़ते ।
कितने लोग आये देखो परमेश्वर की राह में
मारे डले शैतान ने गिरा दिये सब आग में ।
बात गुरू की माने नहीं वो ही आग में गिरते हैं
जो गुरू के संग हैं वो उस प्रभ के संग फिरते हैं
मत ऐसों का ज़िकर करो
जो फूल शाख से गिर गये
उनका ज़िकर करो जो गुरू के संग
परमेश्वर के घर गये ।
मत उनका ज़िकर करो जिन्होंने
गुलशन उजाड़ दिया ।
उनका ज़िकर करो जिन्होंने
झण्डा सूरज पे गाढ़ दिया ।
परिन्दो ने मुझसे कहा परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

कौन है वो एक जिसका कोई हमसफ़र नहीं ?
उसके माँ और बाप नहीं उसके दीवारो दर नहीं
वो है एक परमेश्वर जिसका हमसफ़र नहीं
हर एक दिल में रहता है उसका कोई घर नहीं
कौन हैं वे दो उन जैसा तीसरा कोई नहीं ?
वे हैं चाँद ओर सूरज तीसरा उनसा कोई नहीं
कौन तीन हैं उन जैसा चौथा कोई भी नहीं
ब्रह्मा विष्णु शिव हैं तीन चौथा उन जैसा नहीं
कौन चार हैं दुनियां में पाँचवा उन जैसा नहीं
सनकादिक हैं चार ऋषि पाँचवाउन जैसा नहीं
कौन पाँच हैं दुनियां में उन जैसा छटा नहीं
पाँच तत्व हैं दुनियां में उन जैसा छटा नहीं
कौन छ हैं दुनियां में सातवां उन जैसा नहीं
छ शास्त्र हैं दुनियां में सातवां उन जैसा नहीं
कौन सात हैं दुनियां में आठवां उन जैसा नहीं
सात आसमानो जैसा आठवां कोई नहीं
कौन आठ हैं दुनियां में नौवा उन जैसा नहीं
आठ वसु हैं दुनियां में नौवा उनसा कोई नहीं
कौन नौ हैं दुनियां में दसवां उनसा कोई नहीं
नौ रात्री जैसा दसवां और कोई नहीं
कौन दस हैं दुनियां में ग्यारवां कोई नहीं
यमनियम दस हैं दुनियां में ग्यारवां कोई नहीं
कौन ग्यारह हैं दुनियां में बारवां कोई नहीं
ग्यारह रूद्र हैं दुनियां में बारवां कोई नहीं
कोन बारह हैं दुनियां में तेरवां कोई नहीं
बारह महीने दुनियां में तेरवां कोई नहीं
परिन्दों ने मुझसे कहा परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

कौन झूठ बोलके स्वर्ग जाते कौन सच बोलके नरक में गिर जाते झूठ बोलके जो दूसरो की जान बचाते स्वर्ग जाते सच बोलके जो मासूम को फंसवाते वो सीधे नरक को हैं जाते ।
परमात्मा आदमी में कहां आराम करता है
मस्तक में परमात्मा आराम किया करता है
मरा हुआ कौन सांस लिया करता है
नास्तिक है मरा हुआ सांस लिया करता है
कौन है जो अपने से रब बात करता रहता
वो पानी कौन सा जो जमीआसमा से नहीं आता
सच्चे आशिक रब से बात करते

तू मबीं कुल्लाबीं ईं अख़्तरां। अश इश्क खुद बर तलब ज़नबीं अ फ़लां।

तू सितारों की गर्दिश को ना देख, अपना इश्क सितारों को गर्दिश देने वाले रब के आगे रखदे,
छोड़दे परवाह ए दुनियां ना हो तू पाबन्दे फ़लक,वो ही होता है दुनियां में जो करता है दुनियां का रब।

आँसू आसमा ना जमीन से आंखो से बरसते
उत्तम धरती कौनसी उत्तम वक्त कौनसा
उत्तम आदमी कौन उत्तक काम कौनसा
जहाँ जिकर है उस प्रभ का वो ही धरती उत्तम है
सतगुरू जिस वक्त मिलें वो ही वक्त उत्तम है
नेकी करने वाला आदमी इस संसार में उत्तम है
काम जो है हाथ में तेरे वो ही काम उत्तम है
पंछी कहते लानत है आदमी की जात पे
खाता और सोता है लानत इसकी जात पे
जानवर कहते प्रभ ने आदमी को सब दिया
अपना इश्क नहीं दिया और सबर नहीं दिया
परिन्दो ने मुझसे कहापरिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना ।

कार्तिकेय का मोर बोला कौन जग में सुन्दर है
मैने कहा जो करे सतकरम
वो ही आदमी सुन्दर है
सरस्वती का हंस बोला
कौन जग में है ज्ञानी
मैने कहा जिसका मन बसमें
समझो उसको ज्ञानी
बोला विष्णु का गरूड़
किसपे जहर है बेअसर
मैने कहा जो गुरू के हुकम में
उसपे नरक भी है बेअसर
लक्ष्मी का उल्लू बोला
कौन मनहूस है जग में
वक्त पे जो चेते नहीं
वो मनहूस है जग में
काकभुशण्डी बोला
कौन कौव्वा बनता है
मैने कहा जो गुरू से लड़ता
वो कौव्वा बनता है

मोर बोला सातो आसमान पे कौन रहते
मैने कहा सुनो पहले पे यम चित्र गुप्त रहते
आत्माओं का लेखा जोखा वे करते रहते
दूसरे पे ब्रह्मा ब्रह्म ऋषियों के संग रहते
तीसरे पे विष्णु अपने गणों के साथ रहते
चौथे पे शिव रहते हैं अपने गणों के साथ में
परमेश्वर को जपते रहते पारवती के साथ में ।
पाँचवे आसमान पे विराटपुरूष रहते
सारे जगत के रूप उनके रूप में रहते
छटे आसमान पे तिरगुणब्रह्म रहते
जिनको जीव ईश्वर माया
और तीन गुण भी कहते
सातवे पे जोत निरंजन ईश्वर माया का रूप है
ओंकार ब्रह्माण्ड की ध्वनी है
जो वैदिकों का ईश्वर है
निरंकार की जोत पे
अनगिनत देवता स्तुति करते
सोहंग में जाके सब अपने को
ईश्वर समझते
सतनाम के गगन में हंस झूमते उड़ते रहते
सतपुरख के दरस का अमृत पीते रहते
अलख अगम अकह अनाम है वो परमेश्वर
अनन्तकाल तक चमकने वाली
ज्योति है वो परमात्मा
उसका कोई नाम नहीं है
उसका घर है हर एक आत्मा
रात भर नाचे परिन्दे सुभा हुई सब उड़ गये
नाम लेते हुए प्रभ का प्रभ की तरफ उड़ गये
और कहते जाते थे –एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा
एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा ।
परिन्दो ने मुझसे कहा
दिल के तार पे कोई नग़मा सुना
परिन्दो ने मुझसे कहा ।

ई गुले गोयास्त पुर जोशो ख़रोश। बुलबुलां तर्क जुबां कुन बाश गोश।
जोशोख़रोश से भरा फूल बोलने वाला है,अ बुलबुल ! ज़ुबान को बन्द कर, सुनने के लिये कान बनजा कोई महबूब ऐसा नहीं जो अपने चाहने वाले की ख़बर ना रखे, गूंगे पत्थर, पेड़, हज़ार ज़ुबाने रखते हैं सुनने वाला चाहिये ?

कुदरत की दो उंगलियां

मकरे हक सर चश्मा ए ई मकरहास्त।
कल्बे बीन अला सबीन किबरियास्त।
उस खालिक की यानी के ईश्वर की तदबीर यानी करनी अ इन्सान तेरी करनी और मकर फरेब से कहीं बहुत ज्यादा है, आदमी का दिल उस कुदरत की दो उंगलियों के दरम्यान में है चाहे वो तेरे दिल को इधर करदे या उधर करदे जो तेरे दिल में इल्म पैदा करता है वह उसमें आग भी लगा सकता है ।

हरचे मादा दैम दीदम ई ज़मा।
ई जहाँ परदस्त ओ ऐन सत आं जहाँ।
हमने साफ़ देख लिया के ये दुनियां एक पर्दा है और वास्तविक जहान उससे परे है जैसा ये ससांर दीखता है ये ऐसा नहीं उससे जुदा है ।

जां चा दादम बाज़ नस्तानम नकीर।
सूए पुश्तान बाज़ नायद हेच शीर।
परमात्मा कहता है अ इन्सान मैने जो तुझे दे दिया दे दिया उसे मैं वापस ना लूंगा देख दूध जो मां की छाती से निकलके बच्चे के मुँह में जाता है वह निकला हुआ दूध वापस छाती में हरगिज नहीं जाता पर तेरे बुरे आमाल ही ऐसे हैं जो आती हुई आसमानी रहमत और अच्छाई को तेरे दर से वापस कर देते हैं।

गुश्ता बाशद हम चू सग कैरा अकौल।
मुश्तरदे नहला बर कौले रसूल।
जिस आदमी ने दान दिया और फिर उसे वापस लेलेता है वह उस कुत्ते की तरहा है जो अपने मुंह से करी हुई कै को अपनी जीभ से चाटता और खाता है अवतारों और पैगम्बरों का ये कहना है कि परमेश्वर की राह में की हुई खैरात को कभी वापस नहीं लेना चाहिये जो तूने दे दिया दे दिया अगर लेने वाला वापस लौटाने आवे और अपना दावाजा बन्द करले तो भी तू उसे वापस ना ले और वो सोना चाँदी उसके दरवाजे पर बखेरदे ताकि रस्ता चलने वाले उसे बटोरके ले जावें और तू गुनाह से बच जावे क्योंकि दिये हुए की वापसी नहीं है, गरम पानी में आग जैसे पोशीदा है यानी छुपी है ऐसे ही पुण्य करमो में ईश्वर के चमन और बाग़ात छुपे हैं जिनको आँख वाले ही देखते हैं सख़ावत करना यानी दान करना नफ़ा कमाना है, ख़ैरात से माल नहीं घटता दान करना एक बहुत अच्छा रिवाज इन्सानो के लिये है, दान माल का जोश और बढ़ाव है नदी जैसे बाढ़ के वक्त बढ़ती और चढ़ती है ऐसे ही मालोज़र दान के वक्त ज्यादा चढ़ता बढ़ता है भले ही तेरी आँख ये सब ना देखती हो,तू नाम जप और दान कर ।

आं लजाज कुफ़्रे कानूने कपई अस्त। बां सपाशो शुक्र मनहाज़ नबी अस्त।

लड़ाई झगड़ा बन्दरों और जलील जाहिलों और मनमुखों और काफ़िरों का रास्ता है,जिनके दिल में परमेश्वर की मुहब्बत की रोशनी नहीं,उस मालिके दो जहां का शुक्र करना और नेकी करना ये पैगम्बरों और सतपुरूषों का रास्ता है ।

यार का चेहरा पतझड़ में फूल की तरह है

मेवा ए शींरी निहां दर शाखोबर्ग।
ज़िन्दगी ए जाविदां दर ज़ेरे मर्ग।

शाख़ और पत्ते में मेवा और फल और फूल छिपे हैं, ईश्वर में फ़ना यानी लीन होने में हमेशा की जिन्दगी छिपी है, आँख की सियाही में नूर छिपा है, वीराने में ख़ज़ाना छिपा है, परमेश्वर की आराधना और नेकी के कारनामों में उस रब की मुहब्बत छिपी है बुरी बातों से परहेज़ कर परहेज़ में सब कुछ है, दान कर और दूसरों की मदद कर उसमें तेरा नसीब छुपा है,पुण्यकरमों में गुलिस्तान और बदी में नरक की आग छुपी है,सच्चे गुरू के पास जा और उसकी मान के इन्सान के जामे में वो रब आप पोशीदा है इस बात को सच सच तू जानले ।

कालाए दुज़ दीदाए नबूदो पाएदार।
लेक आरद दुज़ोरा ता पाएदार।

चुराया हुआ सामान पाएदार यानी सदा रहने वाला नहीं होता, ये जिस्म तूने मट्टी पानी हवा और सूरज से चुराया है इसलिये इसके अजवे यानी तत्व टूट जाते हैं एक दिन बिखर जाते हैं और मौत की सूली तक ये पहचुँ जाता है, इस मट्टी के पैर को दुनियां में मत जमा, जो तूने लिया है उसे अदा भी कर, यानी अपने रब का शुकर करता रह, उसकी रहमत के पहाड़ में से जो रात दिन तू खर्च कर रहा है उसकी जगहा उस मालिक के शुकर को रखता रह जिसम सूरज पानी हवा से और रूह उस रब की तरफ से हमेशा रहने वाली शय है जिसम के तत्व भी अस्थिर हैं और आत्मा का तत्व जो कि परमात्मा है वह सदा सदा है इसलिये रूह भी सदा सदा है और तू समझले के तू रूह है जिसम नहीं ।

कार यज़दरूने जाने तू मी बाशद।
कज़ आं रिहा तुरा दरे नक्शायद।

तेरे घर के अन्दर रूह के अन्दर एक चश्मा यानी रोशनी का सोत चाहिये ये बाहर की नहर और मांगे हुए पानी से लाख जगहा बेहतर है यानी उस परमेश्वर के नूर को दूसरो से ना मांग वह तो तेरे भीतर है उस तरफ को मुंह करने की जरूरत है उसे तू तब पहचानेगा जब सच्चा गुरू तेरे सिर पे हाथ रखेगा । आत्मा का सोत वो सोत है कि जहां से तू अनेक शरबत खींच रहा है पर उसे नहीं जानता और उसमें से एक धार कम हो जावे तो तू सदमे में चला जाता है, रूहानी शरबत को पी दुनियां और जिसम का तलबगार ना बन,ये दुनियां पतझड़ की तरहा है और यार का चेहरा इसमें फूल की तरहा तेरे लिये काफी है,अब बता क्या सिर्फ वो एक ही तेरे लिये काफी नहीं तू दूसरे की किसकी आरज़ू करता है उसके सिवा किसी को ना देख।

ख़ाफ़िज़ अस्त रा फ़ास्त ई कर दिगार। बे अर्ज़ी दो बर नियायद हेच कार।
वो प्रभ पस्त करने वाला और बुलन्द करने वाला है,इन दो के बिना काम नहीं चलता,जमीन की पस्ती और आसमान की बुलंदी को देख, इन दोनो के बिना उसकी गर्दिश नहीं,ये आलम इन्हीं दो परों की वजहा से हवा में है,इन्हीं दो से खौफ़ और उम्मीद का मुकाम है,जिन्दगी के उतार चढ़ाव का नाम ही रूह का सफ़र है, अ रब ! तेरी बख़्सीसें लातादाद हैं, बयान से बाहर हैं,उसे कहने में मेरी जुबान शरमिन्दा और लाचार है ।

बेहोश मत बन

मा पे गुल सूए बुस्तानहां शुदा।
गुल नमूदा आं वां ख़ारे बुदा।
हम फूल के लिये बागों की तरफ गये वो फूल नज़र आया पर हकीकत में वो कांटा था, ये दुनियां बेशक फूल की तरहा नज़र आती है पर इसकी हकीकत कांटों जैसी है जिसे तू राहत का सामान समझता है वो ही लाख मुसीबत खड़ी कर देती है नसीब की गर्दिश तुझे बकरी को कुत्ता कुवे को घर और जाल में ताजा दाना दिखाती है ये सब तुझे बरबाद और नंगा करने को आते हैं ज़मीन को धोखे का घर कहा गया है आख़री वक्त में ये अपना हाथ पीछे खींच लेती है वक्त कहता है मैं तेरे सब ग़म चुग लूंगा बस बीस पहाड़ तेरे मेरे बीच में हैं ये सब भूले हुए आदमी को और ज्यादा भटकाने के लिये होता है सही रास्ता वो ही पाते हैं जो अपने रब की बंदगी में लगे रहते हैं और सतपुरूषों के सामने विनम्र हुए बैठे रहते हैं, मौत तमाम लज्जतों को खतम कर देती है और शैतान बहाना बनाके आदमी को गहरी खाई में गिरा देता है,गधा और गधे वाला दोनो कीचड़ में हैं शैतान भी और वो आदमी भी कि जिसे शैतान कीचड़ में ले गया कीचड़ में हैं,गुनहगारों के रोने से आसमान लरजता है और जो रास्ता परमात्मा का चाहते हैं उनको वो परमात्मा बच्चे की तरहा अपनी बाहों में उठा लेता है आसमान उनपे साया कर देता है और रास्ता चाहने वाले के लिये घर के हजारों रास्ते हैं अकल के हजारो खाने हैं पर घर एक ही है और वो है उस परमेश्वर का । खतरे से बचना फ़र्ज है खुशी को ढूंडना भी रिवाज है जरूरी है तू उस रब के घर का उसका पालतू और हिला हुआ कबूर बन उसे कोई बाँस से उड़ावे तो वो कब उड़ता है बल्की ज्यादा भड़कता है और कितना ही उड़े वापस अपनी असल छतरी पर खुश होके नाचता हुआ पहुँच जाता है ।
जीं कदहा हाई सूर कम बाश मस्त।
तांगर दी बुततराश व बुतपरस्त।
सूरतों के इन प्यालों से मदहोश ना हो कभी तू भी बुततराश और बुतपरस्त बन जावे ?
अज़ हाहाई हाइये सूर बगुज़र माशियत
बादांदर जाम सत लीक अज़्जामनियत।
अ वो के तू ! सूरतों के इन प्यालों से गुज़रजा,ना ठहर,शराब जाम में है पर जाम की वजहा से नहीं, बेशक हुस्न नशा पैदा करता है पर हुस्न अता करने वाले रब की तरफ होश कर बेहोश मत बन ।

ता जहां लरजां बूद मानिन्दे बर्ग। दर शुमाल वो दर शमूम बाश वो मर्ग।
दुनियां पत्ते की तरहा लरज़ती रहती है कभी ठण्डी हवा से तो कभी गर्म लू से,कभी सुख है तो कभी दुख,कभी अच्छे दिन हैं तो कभी बुरे दिन,कभी मौत है तो कभी ज़िन्दगी है ।

ईश्वर के हुस्न की शराब

सूए बादा बक्श बुक्शा पहन गोश।
ता अज़ां खूबशनबी बांगे ख़रोश।
ईश्वर के हुस्न की शराब बक्शने वाले सतपुरूष की तरफ को अपने कान चौड़े करके खोल ताकि तू उस शोर और आवाज़ को सुने जो रब की तरफ से आ रही है और जो उसके मस्त शोर शराबा करते हुए नाच रहे हैं उस महफिल में तू सच्चे गुरू के साथ चल वो साकी आवाज़ देके बुला रहा है पर दुनियां के शोर में पड़े लोग उस आवाज़ को कब सुनते हैं ?
गोश दार आवाज़ात आयद दमबदम
चूं रसद बादा नयायद जाम कम।
सुन दम बदम आवाज़ आ रही है उसके इश्क का नशा यानी आसमानी शराब आवेगी तो जाम की कमी ना होगी जाम जिसम है और शराब रूह है, रूह का नूर है रब का नूर है, कहां तक कहूं कि उस रब की मुहब्बत का नशा है, ये फ़िकर ना कर कि लोग तेरी बातों को समझेंगे या नहीं बस तू खुद समझले,अ भले ! मेरे दिल पसन्द मायने को समझले छिलके को छोड़दे बात हरफों के नकाब के पीछे छुपी है, नकाब पे ना जा, जो हुस्न इसके पीछे है उस तक पहुँच, अपने चाहने वालों के लिय उस मालिककुल ने रेत को आटा और आग को गुलिस्तान बना दिया, तो तेरे लिये वो क्या नहीं करदेगा अगर तू उसका सच्चा चाहने वाला बने ? जिस ज़ात ने इन जिसम के प्यालो में अपनी शराबे इश्क भरी है उस रब की तरफ तवज्जो कर, फिर तू किसी सूरत का पाबन्द ना रहेगा, कायनात का ज़र्रा ज़र्रा उसका मज़हर यानी उसका मुख और उसके नूर का नज़ारा नज़र आवेगा जब तू डूब जावेगा उसके इश्क में ।
सूरत अज़ बेसूरतआमद दर वजूद
हुमचना कज़ आतिशे जादस्त दूद।
सूरतें उस बेसूरत ईश्वर से वजूद में आई हैं जैसे आग जली तो धुवां पैदा हो गया, आग वो है और धुवां तू है ।
बेजदस्ते दस्तहा बाफ़द हमी
जानेजां साज़द मुसव्वर आदमी।
वो रब बगैर हाथ पैरों के हाथ बनाता है रूह से रूह और आदमी को आदमी की सूरत बना देने वाला बनादेता है,वो एक आदमी के नुक़्ते से कितनी सूरते बना देता है ।
आंचना का अन्दर दिल अज़ हिज़्रो विसाल
मी सूद बाफीदा गू नगू ख़याल।
जैसे हिज्र और विसाल से दिल में तरहा तरहा के ख़याल पैदा होते हैं ऐसे ही उस रब से तमाम सूरते पैदा होती हैं तमाम आलम और जहान पैदा होते हैं।

कां जहां हम चूं नमकसार आदमस्त। हर के आं जा रफत तलबीं शुदस्त।

वो दुनियां जहां मरने के बाद आत्माऐं जाती हैं नमक की खान की तरहा है जो सब को बेरंग कर देती है सबको बराबर एकसा कर देती है,कब्र की मट्टी को देख जो रंगबिरंगी दुनियां को एक सा बेरंगी की पौशाक पहना देती है,या फिर चिता की आग को देख जो सबको राख करके इकसार कर देती है,

बेसूरत रब

पस सूरहा बन्दा ए बेसूरत अन्द
पेश ऊ रूअन्द वो गर नफ़ी उफतनन्द।

तमाम सूरतें उस बेसूरत रब के गुलाम हैं उसके बोये हुए बीज हैं जो उसके सामने उगे और अफसोस उसी का इन्कार करने वाले बन गये, अपने ही रब से बेवफा हो गये, उसकी मुहब्बत की ठण्डक से निकल कर दुनियां की दहकती आग में कूद पड़े,तू उस बेसूरत को सूरतों में नहीं तलाश कर सकता, **मुझसे पर लेजा जो तू उस तक परवाज़ करना चाहे यानी उड़ना चाहे ?** उस बेसूरत की कारागरी सूरतों को बनाती है कुछ उसके शुकर गुज़ार और कुछ बदकार बन जाते हैं, नेमत की सूरत हो तो आदमी शुकर करता है उसी की मेहेर से आदमी सबर करने वाला बनता है रहम की सूरत हो तो खुश होता है रंज की सूरत हो तो ग़मगीन बन जाता है, शहर की सूरत हो तो सफर करता है, तीर की सूरत हो तो अपना बचाव करने वाला ढाल बन जाता है हसीनो को देखे तो उनकी तरफ चला जाता है,ग़ैबी सूरत आवे तो तन्हाई में इबादत करने वाला बन जाता है जरूरत की सूरत कमाई की तरफ ले जाती है शैतान दिल पे बैठ जावे तो आदमी दूसरे का हक छीनने वाला बन जाता है, सच्चा गुरू यानी सतपुरूष मिल जावें तो ईश्वर की तरफ चला जाता है,अ मोती तू सीप के ऊपर क्यों लरज़ रहा है तू अपने तू को तू ना समझ, तू सीप का ही हिस्सा है अ रूह तू अपने को अलग ना समझ तू उस रब का ही हिस्सा है, तू अपने असल तू को हासिल कर और दुई से गुज़र जा, अ मोती तू सीप था और वो ही है, अ जवान जो तू आइने में देखता है गुरू उसे पहले ही मट्टी में देख लेता है कि तू मट्टी से चल कर आया है और वापस उसी में चला जावेगा, अ सूरत तू बेसूरत था और कुछ दिन बाद तू फिर बेसूरत हो जावेगा जैसा के तू पहले था, तेरी रूह तेरे जिसम में गुम हो गई है मैं उसका गुलाम हूँ जो खुद को देखले यानी रूह को देखले, तू जिसम नहीं तू रूह है।

साया ए रहबर बअस्त अज़ ज़िकरेहक
यक कनात बैके सद लूत तबक।

रहबर यानी गुरू का साया अगर तेरे सिर पर है तो ये परमात्मा का नाम जपने से बेहतर है,अगर तुझे सच्चा रहबर ना मिले तो तू अन्धे की तरहा रास्ते में चलेगा और गिर गिर कर मर जावेगा,रहबर यानी गुरू तलाश कर बिना गुरू परमात्मा के रास्ते में कदम ना रख, सबर करना हजारों तरहा की गिज़ा से बेहतर है, गुरू की आँख जो देखती है तू नहीं देखता, तू गुरू की रोशन आँख से देख, उस रब की तरफ देख।

लीक यक रंगी के अन्दर महशरस्त। बर बदोबर नेक कश्फ़ जाहिरस्त।
प्रलयकाल की उस एक रंगी को देख जो नेक और बद सबको उस परवरदिगार के सामने लेजाके खड़ा कर देती है उस दिन रूहों के परन्द समन्दर के ऊपर कश्ती की तरहा होंगे और सबके हाल उस रब पर जाहिर हो जावेंगे,ये दुनियां सियाह रात है,रूह का सूरज कैद में है,चिराग़ कुवे में है,भेड़यो का ज़माना है, पर ईश्वर तो सब देखता है ।

इल्म यानी ईश्वरीयज्ञान

इल्म दरया अस्त बे हदूदो कनार
तालिबे इल्म सत गवाशे बिहार।
इल्म यानी ईश्वरीय ज्ञान लामहदूद यानी हदों से रहित बेसाहिल यानी जिसका किनारा नहीं ऐसा समुद्र है, उस इल्म के चाहने वाले समन्दरों के गोताख़ोर हैं, अगर उनकी उम्र हजारो साल हो जावे तो भी उस समुद्र से उनका दिल ना भरेगा, आँख मोती और कंकड़ को पहचानती है वो देने वाला रब भी आत्माओं को देखता है के कौन कैसा है ? सीप को ही मोती दिया जाता है ठेकर को नहीं, वह अपना मोती सच्चे दिल में रखता है, शाह के सामने मुंह ना खोल, वह खुद जानता है के तू किस काबिल है, एक बादशाह बहुत दान दिया करता था, पर उसका एक नियम था कि जो उसके सामने बोल गया या कुछ मुंह से मांगने लगा उसे हरगिज़ नहीं देता था, एक मांगने वाला अपने को बड़ा चालाक समझे हुए था एक दिन वो मांगने वालों की कतार में लगा और तरहा तरहा से शाह को अपनी जरूरत बताने लगा शाह ने उसे वहाँ से निकलवा दिया और कुछ ना दिया अगले दिन वो बीमारों के बीच बीमारी का ढौंग रच के आया लंगड़ा बन गया पर शाह ने पहचान लिया और निकाल दिया, अगले दिन वह औरतों की भीड़ में औरत बनके आ गया शाह ने वहां भी कुछ ना दिया, अगले दिन फकीर सूफियों की जमात में उन जैसा बनके आया पर कुछ ना पाया, एक दिन शाह कहीं जाता था देखा एक आदमी मरा पड़ा है, उसने वजीर से कहा कुछ धन इस पर डालदो ताकि कोई इसका कफ़न दफ़न कर सके, शाह ने गौर से देखा ये तो वही है शाह को हंसी आ गई कहा उठ और धन लेले, वह उठ गया वो मरा नहीं था मरने का बहाना किया था फिर शाह ने कहा देख जो मर गया उसे रब ने बहुत कुछ दिया और जो चिल्लाता रहा उसे कुछ ना मिला,अ बंदे ख़मोश रह, सबर कर, वह रब सब कुछ जानता है और तेरे हर हाल को देखता है।

सरे मू तू उक्बल मौते ई बूद
कज़ पशे मुर्दन गनीमत तहार सूद। मौत से पहले मरने का राज़ ये है कि जो अपने को दुनियां में मरे हुए के जैसा बना लेता है उसके पास उस कुदरत की नेमतें आती हैं जो संसार में मरे की तरह है वो अपने रब में जिन्दा रहता है उसके जाम को पीता है ।

आश्रम के जरूरी नियम

आप इन्हें ध्यान से पढ़ये

1–कोई भी व्यक्ति जो आश्रम में आते हैं या आना चाहते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वे बीड़ी, सिगरेट, शराब, सब दुर्व्यसनों का त्याग कर देवें, और अपनी आत्मा में ईश्वर के प्रकाश को बढ़ाने व साधना के उद्देश्य से ही आवें, तथा आश्रम के नियमों का पालन करें, वहाँ की शान्ति और व्यवस्था को बनाए रखें। यदि कोई शान्ति भंग करता है या नियमों का उलंघन करता है तो उसे आश्रम से किसी भी वक्त निकाला जा सकता है।

2–आश्रम में रहने वाले हर व्यक्ति को आवश्यक है कि वो रात्री में 2 बजे की आराधना स्नान करके करे। आराधना हर घण्टे पर होती है जिसमें 5 मिनट का समय लगता है, बड़ी 5 आराधनाऐं हैं जिनमें 20 या 30 मिनट का समय लगता है, प्रातः 7 बजे हवन, कीर्तन गुरूदर्शन10 बजे दैनिक पाठ।

3–वर्ष में दो बार साधना काल कल्प के दिनों में 40 दिन के उपवास निर्जल, जल, या फल वाले मौनव्रत सत्य के व्रत सबके लिए जरूरी हैं।

4–सुभा की चाय का समय– 6बजे । भोजन रविवार में सतसंग के पश्चात शाम का भोजन– सूर्यास्त की आराधना के बाद । देर रात में आये यात्री को भोजन अवश्य मिलेगा। भोजन मौन होकर करें, भोजन उतना ही लेवें कि जूठा ना छोड़ना पड़े, सफाई और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। यहाँ भोजन और आवास का किसी से कोई शुल्क नहीं लिया जाता,शर्त ये है कि व्यक्ति शान्तिप्रिय हो, शान्ति भंग ना करे, और आराधना के साथ साथ दरबार की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सेवा कार्य भी कुछ ना कुछ अवश्य करें ।

5–गुरूदरबार में सर ढक कर जावें। गुरू महाराज अगर एकान्त में हों तो सेवको से भेंट कराने की जिद् ना करें। क्रोध ना करें, प्रतीक्षा करें, गुरूदेव के लिए आप बहुत महत्वपूर्ण तथा अतिप्रिय हैं, इस बात का विश्वास करें तथा सतसंग के बाद ही जावें। गुरूदेव से प्रतिदिन आप प्रातः 8 बजे गुरूदरबार में मिल सकते हैं।

6–सतसंग रविवार में दोपर 1 बजे से 3 बजे तक होता है। उस दिन जूते चप्पल सेवादारों को ही देवें इधर उधर ना निकालें – भेंट राशी या तो गुरूचरणों में या दानपात्र में डालें अन्य किसी के हाथों में ना पकड़ावें ।

7–दरबार का नाम लेके चोगा पहनके कुछ लोग बाहर संगत में घूमते हैं वे आपको नुकसान भी पहुँचा सकते हैं, उनसे सावधान रहें, उनको चन्दा या धन आदि ना देवें जब आपके यहाँ वे आवें तुरन्त दरबार को फोन करें उनको भेजा गया है या नहीं।

8–गुरूदरबार में आके इधर उधर की फालतू बातें ना करें, मौन रहें, और सुमरन अधिक से अधिक करें, सेवा भी अवश्य करें, दरबार में सफाई का विशेष ध्यान रखें,

9–जब बाहर कहीं सतसंग होता है तो अपने घर गुरूदेव को लेजाकर प्रार्थना पढ़वाने की जिद् ना करें, उससे व्यवस्था खराब होती है तथा दूसरे सतसंगियों के दिल में ईर्ष्या और दुख होता है कि गुरूदेव वहाँ गये और वहाँ नहीं गये जात पात का भेद ना करें।

10–सतसंगी अपने नये मकानो पर भूत के चित्र ना लगावें, वरन **एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा** ये परमेश्वर का मंत्र लिखवावें जिससे परमेश्वर का प्रकाश होवे ।

11–शादी विवाह जन्मदिन आदि के जो कार्ड छपते हैं उन पर मंत्र अवश्य छपवावें तथा उपहार में दरबार की वीडियो सीडी, ऑडियो कैसेट, या एक वर्ष की पत्रिका मुक्ति का रास्ता की सदस्यता या अन्य साहित्य देवें।

12–कुछ लोग सभी जगह ऐसे होते हैं जो सज्जनों से अनायास ही विरोध रखते हैं, और झूठी अफवाहें आए दिन फैलाते रहते हैं, उन अफवाहों पर आप ध्यान ना देवें और अपने धर्म मार्ग में लगे रहें, यदि आपके मन में कोई शंका हो, कोई बात हो, कुछ पूछना हो, कोई ग्रन्थि हो,कोई परेशानी हो,तो सीधे गुरूदेव से बात करें, मनमुखों की बातों में ना आवें, और दुष्टजनों की झूठी अफवाहों से आहत ना होवें, अपना जीवन और परमार्थ का पवित्र मार्ग नष्ट ना होने देवें, रविवार या दरबार के किसी त्योहार पर किसी भी आराधना के समय में फोन ना करें, फोन प्रातः10 बजे से शाम 5 तक ही करें, गाँव गाँव शहर शहर में माइक से आराधना करें।

13–गुरूदेव सब तरहा से अपने पास आए लोगों का जीजान से ख़याल रखते हैं और अपना दिव्य प्रेम और आशीष सबको देते हैं, दरबार में किसी तरह का जात पात गरीब अमीर ऊँच नीच का कोई भेदभाव नहीं है,

14–यहाँ रहने वाला हर व्यक्ति गुरूदेव के दिव्य परिवार का एक सदस्य है, रहने वालों को चाहिए कि वे पवित्रआत्मा बनें साधना करें अमृत और प्रकाश से स्वयं को भरे रखें, दूसरों की मदद और सेवा के लिए सदा तत्पर रहें, मीठा बोलें प्रसन्न रहें, देवआत्मा बनें, सच्चे साधक बनें सतगुरू व परमेश्वर के प्रिय बनें...।

हमारे उद्देश्य

1— हमारा उद्देश्य है एक ईश्वर की आराधना के जरिये अपने बिखरे समाज को संगठित करना
2—जातपात को ना मानना, हम देवताओं के पुत्र हैं इस बात का प्रचार करना और अपने नाम के साथ देवपुत्र लिखें। उपेक्षित दुखी बीमार वृद्धों की सेवा करना, उनकी जीवन शक्ति और उत्साह को बढ़ाना, नवयुवकों से हमारा कहना है कि वे अपने वृद्धों की उपेक्षा ना करें ।
3—जो शराब पीने वाले हैं उन्हें हम कहते हैं— शराब ना पियें, बीड़ी ना पियें किसी तरह का नशा ना करें लड़ाई झगड़े और मुकदमों में पड़कर अपना जीवन अपना वक्त और अपना धन बरबाद ना करें।
4—नवयुवकों और उनके अभिभावकों से हमारा कहना है कि— वे दहेज के लोभ में ना पड़ें, और अपने घर में देखें कि हमारे बच्चों में क्या बुराई है उसे दूर करने की कोशिश करें ।
5—अपने जानवरों को कसाई के हाथ में ना देवें,
6—अपने कमजोर पड़ौसी को ना सतावें, कमजोर भाई को ना सतावें, कमजोर पत्नि, कमजोर संतान, कमजोर कर्मचारी, कमजोर ससुराल वालों पे अत्याचार ना करें ।
7—बीमारों कमजोरों और लाचार व्यक्तियों की मदद करने के लिये हर वक्त तैयार रहें ।
8—हमारे राष्ट्र पर अगर कोई संकट आता है तो उसके लिये अपना धन और जीवन कुरबान करने के लिये तैयार रहें, देश के दुश्मनों से डटके मुकाबला करें, उनसे बचने या दुबकने का रास्ता ना खोजें, शेर के सामने और भयानक जहरीले नाग के सामने अगर तुम सीना तान के खड़े हो जाओगे तो तुम उसे मारकर गिरा दोगे, अगर लड़ने से पहले ही घबरा जाओगे तो बिना लड़े ही तुम हार जाओगे, पाप आत्माओं में कुछ बल नहीं होता, और तुम्हारे साथ धर्म आचरण का बल है, परमेश्वर तुम्हारा मददगार है, सो डरो नहीं और आगे बढ़ो तथा जगत में धर्म की रोशनी को आगे ले जाओ।
9—अपने समाज को संगठित करो, सच्चाई और ईमानदारी से धन कमाओ, अपने घर को तपोवन जैसा पवित्र और उच्च संस्कारों से परिपूर्ण बनाओ, रोज पहले स्नान करो, रोज परमेश्वर की आराधना करो, रोज गुरूबचनों का और वेद की दो ऋचाओं का ध्यान पूर्वक पाठ करो, उन्हें समझो, रोज दान का एक हिस्सा निकाल कर रखो, जो राष्ट्र पर यदि कोई संकट आता है तो उस वक्त वह धन काम आवेगा या साध संगत की सेवा में काम आवेगा, जो माँगने वाले बीड़ी शराब पीते हों उन्हें कभी भी दान आदि नहीं देना चाहिये, अन्यथा देने वाला भी उनके पाप करम में शामिल माना जाता है ।
10—गर्भ में ही कन्याओं की हत्या कराना पाप है, ऐसा ना करो, संसार में जो भी जीव आता है उसका इन्तजाम परमेश्वर करता है, ना कि मनुष्य। अपनी जनसंख्या को घटाओ नहीं, बढ़ओ, नहीं तो देश के दुश्मन जनसंख्या के आधार पर हमारे देश को हम से छीन लेंगे, उन्होंने पहले भी ऐसे ही किया था। जात पात के नाम पर आपस में कमजोर ना बनो, मिलकर रहो, संगठित होके रहो ।
11—महीने के पहले रविवार को आप गुरूदरबार में अवश्य आवें, महीने में कम से कम एक रविवार गुरूर्दशन और प्रवचन सुनने का समय अवश्य निश्चित करें, उससे तुम्हें शान्ति और आत्मा में शक्ति प्राप्त होगी, आपसी मेलजोल बढ़ेगा, और तुम्हारी आत्मिक उन्नति के साथ ही सामाजिक उन्नति भी होगी, अपनी रक्षा के लिये खुद ही तैयार रहें, अस्त्र शस्त्र रखें और संकट के समय अपनी और दूसरों की रक्षा करें, ये ना सोचें कि तुम्हें बचाने आसमान से नीले घोड़े पर सवार होके कोई आवेगा, खुद ही समर्थवान बनो, बहादुर बनो, आत्मा से तपसी और शरीर से सैनिक की तरह बनो, तप और वीरता हमें अपने पुरखों से मिली है, उसे आगे तक बढ़ाओ, अपने देश पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहो ।
12—मेरे राष्ट्र का हर एक व्यक्ति आत्मा से तपस्वी और शरीर से एक मजबूत सैनिक बने, जो अपने धर्म की अपने राष्ट्र की सेवा कर सके रक्षा कर सके। अपने सत संकल्प और धर्म पर अडिग रहो, आत्मा में कमजोर ना बनो, परमेश्वर हमारे साथ है, उसकी मदद हमारे साथ है ।

सतसंग

हे परमेश्वर ! बकरियों को भेड़यो के आगे ना डाल, हमे दुनियां के हाथ में ना सौंप !

फरवरी

5. ग्राम व पो–भटपुरा वाया अफजलगढ़ जि–बिजनौर, आयोजक–श्री रमेशचन्द्र चौहान।

6,7. श्री राम मैरिज होम कोल्ड़ स्टोर निकट राम रतन इण्टर कालिज मिल रोड बिलारी जि–मुरादाबाद, समय–दोपहर 2 बजे से,आयो–समस्त सतसंगीगण, मो–9756498635,8958806112

१८,१९,२०-शिवरात्री सेवा प्रारम्भ

21,22. एल आई सी ओफिस के पास आवास विकास बदाँयू,समय–दोपहर 2बजे,आयो–श्री संजीव शर्मा, मो–9411421983

26.ग्राम व पो–गजरौला,जि–बिजनौर,आयो–धाता विधाता,मो–9756874309

27.ग्राम–सिरसामोहन,पो–पायतीकला,जि–जे.पी.नगर, आयो–श्री राजपाल सिंह व समस्त सतसंगीगण, समय–दोपहर 1बजे से,मो–9012710669,8899716913

मेरे आशना मेरे अपना बनके
मेरे गुलशन को उजाड़ते हैं
नाम लेके मुहब्बत का
मेरे सीने में कील गाढ़ते हैं ।
ना कर शिकायत के दुनियां ने ग़म दिये हैं
फूल के बदले खन्जर दे दिये हैं ।
अपने रब की तरफ मुंह करले
और बात सब ख़तम करदे ।
बेपरदा है सामने वो तेरे
के कदमो पे सर रखदे ।

मार्च

3,4 पन्ना म.प्र. आयोजक श्री योगेन्द्र सिंह मो. 9457884549,9039000882,8899572331

भारतीय नववर्ष 8 दुल्हैंडी

12 ग्रा.व पो. क्योलड़िया जि.बरेली आयोजक समस्त सतसंगीगण समय शाम 3 बजे मो. 8445554270,9758689285,

13 ग्रा. अजवापुर पो. मुल्लापुर जि. लखीमपुर खीरी समस्त सतसंगीगण समय शाम 3 बजे मो. 8009764001,9936851937,

18 ग्रा. पैरूवाला पो. लक्खूवाला जि. बिजनौर आयोजक श्री कल्याण सिंह मो. 9012682279

19 ग्रा. मिलक चंगेरी पो. छजलैट जि. मुरादाबाद आयोजक सोमपाल सिंह पुत्र श्री जालम सिंह मो. 9917445191,9837456092

20 ग्रा. दानसहाय की मिलक निकट बुद्धिबिहार पो. मझोला जि. मुरादाबाद समय दोपहर 2 बजे आयोजक अमित पुत्र श्री राजपाल सिंह मो. 9359717338

25 सूर्यनगर निकट कामाख्यास्टील नजीबाबाद रोड बिजनौर आयोजक नागेन्द्र राणा पुत्र श्री महेन्द्रपाल सिंह मो. 9368659362

26 ग्रा. चकरूस्तमपुर पो. जोया जि. जेपी नगर आयोजक श्री हरकेशसिंह समय दोपहर 2 बजे मो. 9457187711,9758790041

27 ग्रा. बैजला पो.जिरोली धूमसिंह जि. अलीगढ़ आयो श्री धरम सिंह समय दोपहर 2 बजे मो. 8273300954

28 ग्रा.ढाटोली पो. गोंडा जि. अलीगढ़ आयोजक श्री मोहर सिंह समय दोपहर 2 बजे मो.9759234577

गुरूमहाराज से जगहा जगहा प्रार्थना पढ़ने का आग्रह ना करें,**कुछ बिगडे़ हुए सतसंगी जो अब गुरूदरबार में नहीं रहते वे सतसंगियों के घर जाके झूठे बहाने बनाके झूठ बोलके उनसे मोटी रकम ठग लेते हैं ऐसे कई वाकये सामने आये हैं इस लिये आप सतसंगियों को गुरूदेव की तरफ से सूचित किया जाता है ऐसे घटिया लोगों से वास्ता ना रखें और ना उनको धन देवें तुरन्त फोन करके गुरूदरबार को सूचना देवें ।** कृपया मातायें सतसंग में जेवर गहने पहन कर ना आवें कभी वे खो जायें,पत्रिका के सदस्य अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क 180 रू. जमा कराने की कृपा करें व नये सदस्य भी बनावें जिनके यहाँ पत्रिका किसी कारण से नहीं पहुँच पा रही हैं वे आश्रम में सूचित करें जिससे उनको पत्रिका भेजी जा सके,सतसंग के बाद मत्था टेकते समय बाते ना करें,शोर ना करें ,शान्त रहें अनुशासन में रहें, ताकि कोई आपको असभ्य ना समझे ।

बर्गे गुल

बर्गेगुल का मतलब है फूल की पंखुड़ी, वो परमात्मा अगर फूल है तो हर आत्मा उसकी पंखुड़ी है परमेश्वर कहता है अ मेरी आत्मा मेरी तरफ को पलट संसार को ना देख मेरी तरफ देख।

अ बर्गे गुल ज़रा सुन,फूलों का मौसम आया । यानी के तेरे मेरे मिलने का मौसम आया । 1
उस प्रभ के हज़ारो मुख हाथ पैर हज़ारो हैं । फूल तो एक है पंखड़ी हज़ारो हैं । 2
संसार है शीशमहल जलता एक चिराग़ है । बेशुमार शीशे हैं सबमें एक परकास है । 3
प्रभ से मिलने के लिये तुझको मिली ज़िन्दगी । मन की तृष्णा तज दे बंदगी कर बंदगी । 4
सतगुरू मिले हैं तो परमेश्वर भी मिलेगा । उम्मीद लगाए रख उजड़ा गुलशन खिलेगा । 5
ये मौसमे बहार है क्या पिंजरा है परिन्दों का । ये बागे दुनियां है क्या जेलखाना है रूहों का । 6
जाने कौन आया है दिल के दरवाज़े पे । रोशनी सी बिखरी है दिल के दरवाज़े पे । 7
दिल जोगी हो गया तेरे ख़्वाब में खो गया । मैने देर तलक सोचा मुझे ये क्या हो गया । 8
जब तू है सामने क्या मेरी जरूरत है । मुझे खुद में फ़ना करले क्या मेरी जरूरत है । 9
ये राज़ की बाते हैं गैरों से नहीं कहना । मेरी पलकों पे हमनशीं रोशनी बनके रहना । 10
तेरी मेरी दास्तां कहाँ जाके ख़तम होगी । मुहब्बत ही ख़ुदा है सनम ये कभी ना खतम होगी । 11
तू सामने है मेरे तो जन्नत का क्या करना है । तेरे सजदे में जानेमन तेरे सामने मरना है । 12
बर्गेगुल ख़ामोश है नहीं अपना होश है । ख़ामोश रह जानेवफ़ा आलम मदहोश है । 13
तेरा चेहरा है आइना जबसे तुझे देखा है । आइने में तेरी जगहा मैने रब को देखा है । 14
तारीफ़ क्या हो तेरी जो कहा तो भी कुछ ना कहा । जो मुझको कहना था वो तो कहने से रह गया । 15
अ बर्गेगुल तुझसे जुदा होने का वक्त आ गया । मेरी दुनियां में एक आदमी के ख़ुदा होने का वक्त आ गया । 16
तू जाने तमन्ना है तू दिल की राहत है । तुझे भूल नहीं सकता तू मेरी चाहत है । 17
इस ज़मी में तुम्हीं तुम थे आसमा में तुम्हीं तुम थे । जब कुछ भी नहीं था कहीं बस एक तुम ही तुम थे । 18
आँखों में तुम ही तुम थे होठों पे तुम्हीं तुम थे । मेरी हस्ती के परदे में देखा तो तुम्हीं तुम थे । 19
दिल मेरा फ़कीर बना सिर्फ़ तेरे लिये मैं आया । तेरे मिलने की हसरत मैं दिल में सनम लाया । 20
जाने कौन हसीन आया दिल के दरवाज़े से । आया है रब का नूर मेरे दिल के दरवाज़े से । 21
जब तेरी आँखों से टकराई नज़र मेरी । जाने क्या हो गया जैसे बिजली कहीं गिरी । 22
मेरी रूह भटकती थी इकली वीरानो में । तू हाथ पकड़के मुझे लाया गुलिस्तानो में । 23
कुछ ऐसे हैं महफ़िल में बुलाओ तो नहीं आते । और तेरे दीवाने हैं के उठकर ही नहीं जाते । 24
मेरे दिल से निकलके कहीं तुम दूर नहीं जाना । जाना भी हो तो जानेजां तुम लौट के आ जाना । 25
मैं चिराग़ जलाऊँगा मैं ख्वाबों में बुलाऊँगा । मत किसी को बताना तुम मैं पलकों को बिछाऊँगा । 26
मेरी आँखों में देखले तेरी ही तस्वीर है । मैं बिगड़ा हुआ मयकश तू मेरी तकदीर है । 27
तुम याद आओगे तुम्हें भूल ना पायेंगे । जब जब तेरी यादों के दिल पे कोहरे छायेंगे । 28
दो दिन के लिये ही सही हमसफ़र तो कोई मिल गया । जिन्दगी तेरे गुलशन में कोई फूल तो खिल गया । 29
सिवा तेरे मेरी बातें कोई नहीं जानता । इश्क है या इबादत है ये मैं भी नहीं जानता । 30
रात ढलती जाती है नींद क्यों नहीं आती है । ये मुहब्बत है तेरी जो सारी रात जगाती है । 31
क्या ख़ूब साकी है क्या ख़ूब दिवाना है । जिसपे भी नज़र डालो हर एक परवाना है । 32
दिल में तुझे रखे हुए दुनियां से चला जाऊँगा । तेरा ज़िकर फ़रिश्तों को उस दुनियां में सुनाऊंगा । 33
कोई दर्द मेरा सुनलो मैं हूँ फूल वीरानो का । मेरा अपना कोई नहीं मैं हूं यार बेगानो का । 34
तेरा मेरा रिश्ता कई जन्मो पुराना है । हर जनम में जाने जहां मैने तुझे पहचाना है । 35
ये मत सोचो के मैने तुम्हें बेगाना कर दिया । दीवाना कर दिया अपना दीवाना कर दिया । 36
अ बर्गेगुल मेरे सीने से आके लगजा । बड़े दुख उठाये तूने मेरे सीने से लगजा । 37
तेरे बिन नाकाम हूँ मैं गुमनाम तेरा नाम हूँ मैं । मैं मट्टी हूँ तो क्या तेरी पहचान हूँ मैं । 38
अपने रब की तरफ़ को देख सब बातें खतम करदे । मत दुनियां की बातें कर दरवाज़े बन्द करदे । 39
फुलसन्दे वाले बाबा रहने भी दो ये बातें । क्या ज़मीन वाले समझें आसमानो की बातें । 40